ओ३म्

आर्य सेवक

अप्रैल २०१३

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पृष्ठ

आर्य समाज हंसापुरी नागपुर

कृषि बोधोत्सव के अवसर का ग्रुप चित्र (समाचार पृष्ठ 22 पर देखें)

आर्य समाज पहुरजिरा

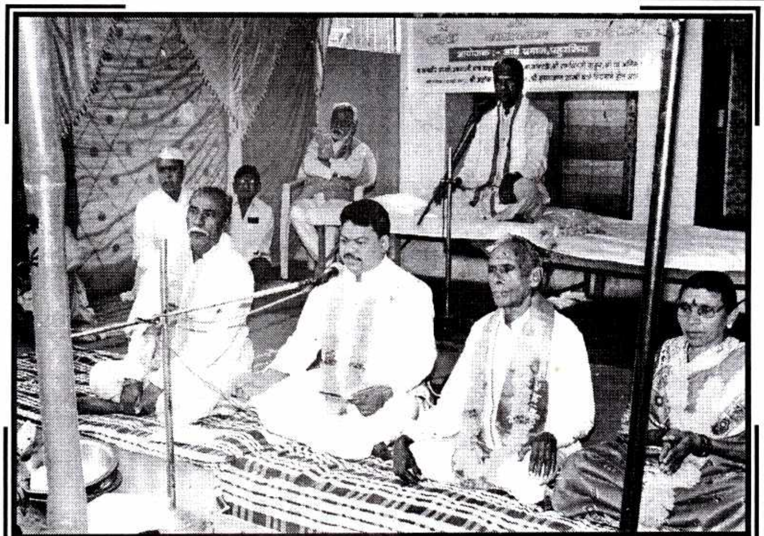

गायत्री महायज्ञ के अवसर का चित्र (समाचार पृष्ठ 22 पर देखें)

सभा कार्यालय : दयानन्द भवन, मंगलवारी सदर बाजार, नागपुर (महाराष्ट्र)

वेदाञ्जलि

अभय देव वेदालंकार

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि स इद् देवेषु गच्छति।। ऋ.1.1.4।

शब्दार्थ – (अग्ने) हे परमात्मन् । (त्वं) तुम (यं) जिस (अध्वरं यज्ञं) कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को (विश्यतः परि भूः असि) सब तरफ से व्याप लेते हो (स इत्) केवल वहीं यज्ञ (देवेषु गच्छति) दिव्य फल लाता है।

हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते है और चाहते है कि यज्ञ सफल हो जायें। परन्तु हे देवों के देव अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूंकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य–शक्तियों के अर्थात् देवों के द्वारा ही सब कुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वरा अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो जरूर होना चाहिये। पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते है, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संगठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा ओर कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं, तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हे नहीं पहुंचता– सफल नही होता । हे प्रभो ! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुझे भूल जायें तो हे प्रकाशक देव! हमारी अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना, हमारी अन्तरात्मा बोल उठे कि ''हे अग्ने! जिस कुटिलता व हिंसा–रहित यज्ञ को तुम सब तरफ से घेर लेते हो, व्याप लेते हो; केवल वही यज्ञ देवों में पहुंचता है अर्थात् दिव्य फल लाता है– सफल होता है।'' सचमुच तुम्हे भुलाकर, तुम्हे हटाकर यदि किसी संगठन शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के जोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न होगी।

...........***...........

आर्य समाज

अखिल विश्व को आर्य बनाने जो संकल्पित आज है,
बिन मूरत बिन घंटे का यह मंदिर आर्य समाज है ।
यज्ञ हवन, संध्या का पावन जहां हो रहा काज है,
बिना मूरत बिन घंटे का यह मन्दिर आर्य समाज है ।।

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष – ११३ अंक ४
सृष्टि संवत १९६०८५३११३
दयानंदाब्द – १८९
संवत – २०७०
सन – २०१३, अप्रैल – २०१३

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो. नं. ०९४२५१५५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ०९३७३१२११६४

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१

सह सम्पादक
पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, नागपुर
मो. : ०९९७००८००७४

सह संपादक एवं कार्यालय मंत्री
अशोक यादव, नागपुर
मो. : ९३७३१२११६३

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार,
सदर, नागपुर
दूरभाष क. ०७१२–२५९६५५६

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ट क्र.
१.	वेदाञ्जलि	अभयदेव विद्यालंकार	२
२.	सम्पादकीय		४
३.	आर्य समाज·······	डा. रघुवीर वेदालंकार	६
४.	वर्तमान परिवेश················	डा. सुन्दरलाल कथूरिया	१०
५.	वैदिक समाज व्यवस्था·········	डा. धर्मेन्द्र कुमार	११
६.	आर्यो निद्रा त्यागो·······	शकुन्तला आर्या	१५
७.	आर्य समाज	मैथिली शरण गुप्त	१७
८.	स्वास्थ्य का परम शस्त्रु ·······	डा. नागेन्द्र	१८
९.	आर्य जगत के समाचार		२१
१०.	सभा क्षेत्र के समाचार व सूचनाएं		२१
११.	आर्य पर्वो की सूची		२३

स्वागत है नव वर्ष का

सारे संसार में नव वर्ष का स्वागत होता है। अपने भारत वर्ष में कई नव वर्षों को मनाने की परम्परा चली आ रही है । इनमें स्वदेशी हिसाब से सृष्टि संवत, विक्रम संवत तथा शक संवत ही प्रमुख हैं । पर हमारे गुलामी के संस्कारों के वश अंग्रेजी नया साल हमारी बीच चल रहा है । (यह 31 दिसम्बर तथा 1 जनवरी के किस (अ) संस्कारित रूप से मनाया जाता है वह अलग बात है) स्वाभिमान के जागरण से यह प्रथा समाप्त होगी ऐसा मान कर चलते हैं। आज हम विक्रम संवत तथा इससे सम्बद्ध 139 वें आर्य समाज स्थापना दिवस के सम्बन्ध में चर्चा करें । विक्रम संवत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है । यह उल्लेख है कि ब्रह्मा ने इसी दिन सूर्योदय के साथ जगत की रचना की। इतिहास साक्षी है कि आर्य जाति में नव संवत्सर मनाने की परम्परा आदि सृष्टि से ही चली आ रही है। मुगलकाल में हमारी व्यवस्थाओं पर कई कुठाराघात हुए पर कालजयी संस्कृति पर कोई दुष्प्रभाव न हो सका । हमारी नवसंवत्सर मनाने की परिपाटी चल रही है ।

युग प्रवर्तक, माननीय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी दिन अपने गहन अध्ययन, देशाटन, चर्चाओं, शास्त्रार्थों आदि के निचोड़ के रूप में आर्य समाज नामक क्रान्तिकारी संस्था की स्थापना की। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो उन्होंने बहुआयामी क्रान्ति का शंख फूका जिसकी गूंज दिग दिगन्त तक पहुंची ।

सृष्टि संवत 1960853113, विक्रमी संवत 2070 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा – 11 अप्रेल 2013, को नव वर्ष व 139 वॉ आर्य समाज स्थापना दिवस का आयोजन हम कर रहे हैं। इस दिन बधाईयों का आदान-प्रदान करना तो आम बात है । आर्य पर्व पद्धति में लिखित अनुसार विशेष यज्ञ विशिष्ट मंत्रों की आहूतियों के साथ करना तो होता ही है चाहे घरों पर हो या आर्य समाज मन्दिरों में । इसके साथ ही प्रभात फेरियाँ, सार्वजनिक सभाओं का आयोजन किया जाता है जिसमें विद्वानों के प्रेरणा दायक तथा ऐतिहासिक जानकारियाँ आदि दी जाती हैं। साथ ही बालक-बालिकाओं के कार्यक्रम तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। कुछ आत्मावलोकन करने का यह पर्व अवसर प्रदान करता है । व्यक्तिशः तथा संस्थाओं के कर्णधारों को निम्नलिखित बातों पर विचार करने की आवश्यकता है :-

महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज द्वारा निर्धारित मानव उत्थान के मार्ग पर चलने के लिए जो कार्य निर्धारित किए गए हैं। जैसे संध्या, हवन, योग आदि केवल पुस्तकों में ही दर्ज नहीं रह जाएं ।

दलित उत्थान, सामाजिक समरसता के कार्यक्रम, वर्ग-भेद, भाषा भेद, प्रादेशिक संकुचितता के कारण राष्ट्रीयता के विकास में अवरोध तो नहीं हो रहा है। अंधविश्वास, आडम्बर और तथा कथित आस्था के कारण हम गहरी अंधेरी खाइयों की ओर तो नहीं बढ़ रहे हैं।

शिक्षा के नाम पर केवल अक्षरज्ञान कराने, विज्ञान, प्रोद्यौगिकता आदि के प्रसार की ओट में केवल भौतिकता की ओर तो कहीं हम अपने युवकों को ढकेल रहे हैं । भौतिकता के साथ ही आध्यात्मिकता मानवता के उत्थान के लिए उच्च संस्कार प्रदान

करने की बात दृष्टि से ओझल तो नहीं हो रही है । आयोजन की औपचारिकता में कहीं हमारे कार्यक्रम 'लकीर के फकीर' वाली स्थिति में तो नहीं है ।

नवीन युग की आवश्यकताओं के अनुरूप हम 'ई' प्रणाली में कितने कदम आगे बढ़ रहे हैं । हमें आगे क्या करना है। आज के विज्ञ जन घर के पुस्तक भण्डार या पुस्तकालयों की पुस्तकों से सन्तुष्ट नहीं हो रहे रहे हैं । इन्टरनेट में उपलब्ध पुस्तकों के द्वारा उनको ज्ञान पिपासा की पूर्ति के लिए हम कितने प्रयत्नशील हैं । यह देखने की बात है।

आज कोई दिन ऐसा नहीं होता जिस दिन लड़कियों एवं महिलाओं के लैंगिक शोषण का समाचार न हो । यह दुखद है। महिला सशक्तिकरण के लिए जितने प्रयास किये गए हैं क्या उनके परिणामों से सन्तोष होता है ? क्या कानूनी प्रावधानों के अलावा घरों, परिवारों तथा सामाजिक संस्थाओं में संस्कार प्रदान करने के हमारे प्रयासों को व्यापक रूप देकर आगे बढ़ाने की आवश्यकता है । भारत देश के चहुंमुखी विकास के लिए राजनैतिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन करने तथा उन्हें सात्विकता प्रदान करने के लिए हमें व्यक्तिशः तथा सामूहिक रूप से किस प्रकार आगे बढ़ना होगा यह सोचना होगा ।

अनेक बातें है पर एक आवश्यक बात की ओर ध्यान आकर्षित करना समीचीन होगा। आर्य समाज में स्थानीय से लेकर सार्व देशिध स्तर तक एकता लाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को विचार करना होगा ।

स्वागत में पत्र पुष्प और श्रद्धाओं को अर्पित किया जाता है । आइए नव वर्ष के स्वागत में अपना यत् किंचित समर्पण करने का कुछ संकल्प करें ।

जयसिंह गायकवाड

विशेष सूचना

आर्य समाज स्थापना दिवस गुरूवार 11 अप्रैल 2013 वो प्रभावोत्पादक सामग्री प्रस्तुत करते हुए उत्साहपूर्वक ढंग से मनाएं । आर्य समाजें अधिक से अधिक आर्यों के घरों पर ओ३म् ध्वजा फहराने के लिए उपलब्ध कराएं तथा तत्सम्बधी प्रेरणा देवें ।

आयोजन के उपरान्त स्थानीय समाचार पत्रों में समाचार छपवाने का प्रयास करें। सूचना सभा कार्यालय को शीघ्र भिजवाएं जिससे उन्हें 'आर्यसेवक' में प्रकाशित किया जा सके ।

निवेदक :

अनिल शर्मा, मंत्री सत्यवीर शास्त्री प्रधान व सर्व पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य

आर्य समाज का सामाजिक क्षेत्र में योगदान

—वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

अपने प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के अनुरूप ही आर्यसमाज ने भी विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया है। धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक इत्यादि सभी क्षेत्रों में आर्यसमाज ने जो कार्य किये हैं वे यशस्वी एवं स्थायी हैं। ये सभी सुधार यद्यपि एक दूसरे के पूरक हैं। इनमें से एक के बिना दूसरा सुधार अधूरा है। आर्यसमाज इस बात को प्रारम्भ से ही जानता था इसीलिए उसने इन सभी क्षेत्रों में कार्य किया । यहां पर हम केवल आर्यसमाज के सामाजिक योगदान की चर्चा करेंगे।

महर्षि दयानन्द के समय हमारा समाज नाना कुरीतियों एवं आडम्बरों से ग्रस्त था। इन सबका कारण उसका अज्ञान था। शूद्रों एवं स्त्रियों की दशा तो उस समय अत्यन्त तिरस्करणीय हो गयी थीं। इन दोनों ही वर्गो में अपनी दयानीय अवस्था से निकलने की छटपटाहट भी उस समय देखने में नहीं आती थीं। इसके अतिरिक्त अविद्या या अज्ञान तथा इसके कारण होने वाली अन्य बुराइयां भी समाज में व्याप्त थीं। आर्यसमाज ने उन सभी को दूर करने का प्रशंसनीय कार्य किया है। प्रमुख रूप से सामाजिक क्षेत्र में आर्यसमाज का योगदान इस प्रकार है ।

1. अस्पृश्यता निवारण : – अस्पृश्यता हमारे समाज का सबसे घातक रोग रहा है । चतुर्थ वर्ण के व्यक्ति इसके प्रमुख शिकार थे। उनके साथ खाना पीना तो दूर, उन्हें सर्वथा अस्पृश्य मान कर उनकी छाया से भी दूर रहने की चेष्टा की जाती थीं। उन्हें सवर्णो के कुओं पर चढ़ने का, घुड़सवारी करने का, चारपाई आदि पर अन्यों के साथ बैठने जैसे मौलिक अधिकार भी प्राप्त न थे। आर्थिक एवं शैक्षिक रूप में तो उनकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी ही । आर्यसमाज ने उनके लिए विकास के सभी मार्ग खोले । स्वामी दयानन्द ने शूद्रों को वर्णव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग मानकार उनके साथ किये जा रहे भेद भाव को दूर किया । आर्यसमाज ने न केवल अस्पृश्यता का निवारण किया, अपितु शूद्रों को भी शिक्षा का समान अवसर देते हुए शूद्रों को पण्डित बनाया तथा अपने साथ उन्हें भोजन आदि करा कर अस्पृश्यता के समूलोच्छेद का सार्थक प्रयत्न किया । आर्य समाज ने ऐसा श्रेष्ठ कार्य उस युग में किया जबकि ऐसा करने वालों को जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता था तथा उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। यहां पर एक उदाहरण देना उपयुक्त होगा कि पंजाब में महात्मा मुंशीराम जी के साथी चिरंजीलाल को आर्यसमाज से सम्पर्क रखने के कारण जाति बहिष्कृत कर दिया गया। उसकी माताजी की मृत्यु होने पर एक भी व्यक्ति उनकी सहायतार्थ उनके घर नहीं आया। अतः चिंरजीलाल जी को अपनी माताजी का शव स्वयं कन्धे पर उठाकर श्मशान ले जाना पड़ा तथा स्वयं ही लकड़ियां ढोकर उनकी अन्तेष्टि करनी पड़ी । अस्पृश्यता को भारतीय संविधान में अपराध माना गया है। आर्यसमाज ने इस क्षेत्र में कार्य करके भारतीय संविधान की रक्षा का ही कार्य किया है।

यद्यपि महर्षि दयानन्द से पूर्व तथा उनके पश्चात् अन्य संगठनों ने भी अस्पृश्यता के निवारण के उपाय किये। यथा–भक्ति आन्दोलन । इस आन्दोलन का प्रमुख नारा था – जात–पात पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई । सन्त ज्ञानेश्वर, तुकाराम, रामानुज, कबीर आदि सन्तों ने इस दिशा में कार्य किया तथापि प्रमुख रूप में इनका कार्य धार्मिक क्षेत्र में ही अधिक था।

इसी प्रकार 1897 में एम.जी. रानाडे के नेतृत्व में अस्पृश्यता के निवारणार्थ प्रार्थना समाज की स्थापना की गयी। राजा राममोहन राय ने भी इसी उद्देश्य से 1838 में ब्रह्म समाज की स्थापना की, किन्तु ये आन्दोलन बंगाल के शिक्षित वर्ग तक ही सीमित रहे। इनका देशव्यापी प्रभाव नहीं पड़ सका । महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर अस्पृश्यता को कलंक घोषित करके वैदिक वर्ण व्यवस्था को प्रतिष्ठित किया । आर्यसमाज ने अछूतों को शिक्षित करके न केवल अस्पृश्यता को ही दूर किया, अपितु अछूतों को पुरोहित, उपदेशक, शिक्षक तथा ब्राह्मण बनाया । इस आन्दोलन के विषय में सुप्रसिद्ध इतिहासकार के. सी. जायसवाल लिखते हैं– ''स्वामी दयानन्द ने ऐसा महान कार्य किया है जिसे पूर्ण करने में बुद्ध से राम मोहनराय तक उनके पूर्वज सफल नहीं हो सके । उन्होंने विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टिकोण से जन्मगत जात–पात का मिथ्यापन प्रतिपादित किया था।'' इसी प्रकार के विचार प्रकट करते हुए गांधी जी कहते हैं ''स्वामी दयानन्द सरस्वती हम सबके लिए जो मूल्यवान बपौतियां छोड़ गये हैं, उनमें से निःसन्देह एक है, उनके द्वारा अस्पृश्यता के विरूद्ध आवाज उठाना। फ्रांस के रोंमा रोला तो इससे भी बढ़कर कहते हैं कि ऋषि दयानन्द ने

अस्पृष्ता के इस घोर अन्याय को सहन नहीं किया । उनसे बढ़कर अछूतों के अधिकारों के लिए लड़ने वाला कोई नहीं हुआ।''

आर्यसमाज ने ऋषि दयानन्द के इस आन्दोलन को सफलतापूर्वक बढ़ाया । स्वामी श्रद्धानन्द ने सर्वप्रथम इसे व्यावहारिक रूप दिया। स्वामी जी कहते थे। ''मेरे लिए अस्पृश्यता के अभिशाप को उखाड़ फेंकना भारत की राष्ट्रीयता की सुरक्षा के लिए आवश्यक शर्त है।'' इसी प्रकार लाला लाजपत राय ने भी कहा कि ''अस्पृश्यता हिन्दुओं एवं हिन्दू धर्म में एक पूर्णतया अमानवीय और जंगली व्यवस्था है।''

अस्पृश्यता की भयानकता का अनुमान इसी से किया जा सकता है कि इसके कारण समाज के एक चौथाई वर्ग को हमने अछूत मान कर उसे निन्दनीय एवं उपेक्षा पूर्ण जीवन व्यतीत करने पर विवश कर दिया था। यही कारण था कि ईसाई तथा मुसलमान भेड़ों की तरह आसानी से उनका धर्म परिवर्तन कराकर अपनी जनसंख्या में वृद्धि कर रहे थे। इसका ज्वलन्त प्रमाण यह है कि मुहम्मद अली ने कहा था कि 6 करोड़ अछूतों को हिन्दू तथा मुसलमानों में आधा-आधा बांट लिया जाना चाहिए। अली की इस कुत्सित मनोवृत्ति का उत्तर देते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा था कि ''ये 6 करोड़ अछूत विराट् हिन्दू समाज के अभिन्न अंग है। अत इन्हें इस बृहद् शरीर से किसी भी प्रकार अलग नहीं किया जा सकता।'' इस प्रकार अस्पृश्यता के निवारण से आर्यसमाज ने विराट् हिन्दू समाज को टूटने से भी बचाया है।

2. बालविवाह – अछूतों के समान ही उस समय स्त्रियों की दशा भी अत्यन्त शोचनीय थीं। उनकी उन्नति के सभी मार्ग अवरूद्ध कर दिये गये थे । समूची नारी जाति को दो प्रबल कुरीतियों ने घेरा हुआ था। उनमें से एक है बाल विवाह तथा दूसरी है अशिक्षा । बाल विवाह को समाज का आदर्श विवाह माना जाता था। महात्मा गांधी, स्वामी श्रद्धानंद, महमना मदन मोहन मालवीय जेसे प्रतिष्ठित पुरूषों की पत्नियों की आयु उनके विवाह के समय 12-13 वर्ष ही थी । सामान्य जनता में तो यह रोग महामारी की भांति व्याप्त था। इसका दुष्परिणाम अनेक नन्हीं बालिकाओं को वैधव्य के रूप में भुगतना पड़ता था। जो बाल्यकाल उनकी शिक्षा का था उसमें ही वे विधवा होकर देवदासियों के रूप में नारकीय जीवन व्यतीत करने पर विवश होती थीं। महर्षि दयानन्द ने बाल विवाह का प्रबल खण्डन किया तथा वेद का प्रमाण देकर कहा **'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दत पतिम्'**। अर्थात् कन्या भी युवा अवस्था तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए युवा पति को प्राप्त करती है। आर्यसमाज ने वेद के इस आदेश को सर्वत्र प्रसारित किया, जिसके परिणाम स्वरूप स्त्रियों को इससे मुक्ति मिली । आजकल यद्यपि पाश्चात्य सभ्यता अथवा शिक्षा प्राप्ति के कारण भी स्त्रियों ने इस कुप्रथा को त्याग दिया है तथापि इसके उन्मूलन का श्रेय आर्यसमाज को ही जाता है।

3. सती प्रथा – स्त्रियों के जीवन वृक्ष पर कुठाराघात करने वाली दूसरी भयंकर कुरीति सती प्रथा थी जिसके कारण विधवा स्त्री को मृत पति की चिता में जीवित ही जलने के लिए विवश कर दिया जाता था। यद्यपि राजा राम मोहन राय आदि ने भी इस प्रथा का विरोध किया, किन्तु उनका प्रयास सम्पूर्ण समाज के द्वारा स्वीकार्य नहीं हो सका। आर्यसमाज के प्रचार ने नारी जाति को इस जघन्य कुकृत्य से मुक्ति मिली

4.विधवा विवाह : महर्षि दयानन्द के समय स्थिति यह थी कि पुरूष तो कई-कई विवाह कर लेते थे, किन्तु स्त्रियों को बाल्यकाल में विधवा होने पर भी पुर्नविवाह की अनुमति न थी। जिस कारण विधवा स्त्री के सामने तीन ही मार्ग थे। (1) या तो वह पति के साथ सती हो जाए। (2) या मन्दिरों में देवदासियों के रूप में नारकीय जीवन व्यतीत करें । (3) या आजीवन वैधव्य जीवन व्यतीत करते हुए समाज की दृष्टि में पापिनी एवं उपेक्षित बनी रहे।

महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रमाण देकर सिद्ध किया कि विधवा स्त्री को भी पुनर्विवाह करके समाज में सम्मान जनक जीवन जीने का अधिकार है। इसके लिए उन्होंने **'विध्वेवय देवरम्'** जैसे वैदिक प्रमाणों को उपस्थित किया। आर्यसमाज ने इस दिशा में पर्याप्त कार्य किया है। उसका ही परिणाम है कि आज विधवा स्त्री पुर्नविवाह करके सम्मान का जीवन जी रही है। इस प्रकार स्त्रियों का दुरावस्था को समाप्त करने में आर्यसमाज का महत्वपूर्ण योगदान है। इसीलिए उपन्यास सम्राट, मुंशी प्रेमचन्द ने कहा था कि नारी जाति को इस बात के लिए महर्षि दयानन्द का ऋणी होना चाहिए कि उनके प्रयत्नों से उसे पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति मिली ।

5. अशिक्षा : – आर्यसमाज का शिक्षा के क्षेत्र में महनीय योगदान है। इसमें आर्यसमाज के गुरूकुलों तथा डी.ए.वी. विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की सक्रिय भूमिका रही है। महर्षि दयानन्द ने नियम बनाया था कि ''अविद्या का नाश और विद्या की उन्नति करनी चाहिए।'' अविद्या का जन्म अशिक्षा से ही होता है। आर्यसमाज ने

सरकार के समानान्तर रूप में अशिक्षा निवारण का जो व्यापक प्रयास किया, उसे सभी मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हैं।

शिक्षा के विषय में महर्षि दयानन्द ने पर्याप्त लिखा है। ऋषि के अनुसार शिक्षा निःशुल्क तथा सभी के लिए अनिवार्य होनी चाहिए। स्वामी जी लिखते हैं कि ''यह राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि आठ वर्ष के पश्चात् कोई भी अपने सन्तानों को घर में न रख पायें । जो इस नियम को तोड़े, वह दण्डनीय हो।'' आज सरकार ने इस तथ्य को स्वीकार करके बच्चों के लिए शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क घोषित कर दिया है। यह ऋषि के सिद्धान्तों की ही विजय है।

शिक्षा के क्षेत्र में महर्षि की तीसरी मान्यता थी कि यह सबके लिए समान होनी चाहिए । धन अथवा पद के आधार पर इसमें भेद-भाव न होना चाहिए। ऋषि लिखते है कि ''चाहे दरिद्र का बालक हो या राजकुमार हो, सबको खान-पान, वस्त्र, आसन दिये जायें।'' आर्यसमाज के गुरूकुलों में इसका व्यवहारिक रूप अब भी देख जा सकता है। सरकार भी इस असमानता की बुराई को दूर करने में समर्थ नहीं है जिस कारण पब्लिक स्कूलों एवं सरकारी स्कूलों के रूप में धनी एवं निर्धनों की शिक्षा में भेद स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है।

6. शुद्धि आन्दोलन – महर्षि दयानन्द के समय में ईसाईमत तथा मुस्लिम मजहब का इतना प्राबल्य था कि ईसाई प्रचारकों तथा मुसलमानों के द्वारा जबरन तथा धन का लालच देकर तो हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन किया ही जाता था, इसके अतिरिक्त स्वेच्छा से भी हिन्दू लोग इन मतों को अपना रहे थे। उदाहरणार्थ लाला लाजपत राय के पिता जी मुसलमानों की भांति ही नवाज पढ़ते तथा रोजा रखते थे। अन्य भी अनेक व्यक्ति इस प्रकार के थे। ईसाईयों के विषय में तो स्वयं महर्षि ने ही अपने एक भक्त के सामने अपनी वेदना तथा इच्छा इस प्रकार प्रकट की थी – **''कटि बांध कर भीलों की बस्ती में चले जाइए। वे दिनों दिन धड़ा-धड़ ईसाई होते चले जा रहे हैं। उन्हें अपनी इच्छानुसार ईश्वरभक्ति का उपदेश देकर ईसाईयों के पंजे से बचाइये । आर्य जाति के छिलते हुए तलुओं की, टूटती हुई अंगुलियों की और काटते हुए पावों की रक्षा कीजिए।''**

आर्य समाज ने इस दशा में पर्याप्त कार्य किया है जिसकी प्रशंसा राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने यह कह कर कही है कि ''आर्यसमाज ने ईसाईयत तथा मुस्लिम आंधी को रोकने में श्लाघनीय भूमिका का निर्वाह किया है।'' आर्यसमाज ने ही महात्मा गांधी के पुत्र हीरालाल को मुसलमान बनने पर शुद्ध करके पुनः उनकी माता कस्तूरबा को सौंपा था। आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन को राष्ट्रीय प्रश्न समझा । यही कारण है कि महात्मा गांधी द्वारा इसका विरोध किये जाने पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेसी कमेटी से तो त्याग पत्र दे दिया था, किन्तु आन्दोलन को नहीं छोड़ा था। उनके प्रयत्न से ही असगरी बेगम को शुद्ध करके लक्ष्मी देवी बनाया गया, जिस कारण कट्टरपन्थी मुसलमान उनकी जान के ही शत्रु बन गये। ऋषि दयानन्द के सच्चे शिष्य आर्य मुसाफिर पं. लेखराम ने अपनी जान की परवाह न करके भी शुद्धि के क्षेत्र में जो कार्य किया है, वह स्वार्णाक्षरों में लिखने योग्य है। आज भी इस आन्दोलन की प्रबल आवश्यकता है।

इन्दौर से 'नई दुनिया' अखबार ने एक सरकारी रिपोर्ट के माध्यम से अपने 11.7.2005 के अंक में बतलाया है कि पिछले 10 वर्षो में झाबुआ जिले में ईसाईयों की जनसंख्या अस्सी प्रतिशत बढ़ी है। अगले 10 वर्षो में यह संख्या पुनः इतनी ही बढ़ जायेगी । ऐसे आंकड़े बताते हैं कि इस दिशा में अभी भी आर्यसमाज को बहुत कुछ करना शेष है। भारत के पूर्वी भाग में तथा मध्यप्रदेश के आदिवासी उन इलाकों में ही ईसाईमत ने अपने पांव जमाए हैं जहां कि आर्य समाज का प्रचार नहीं था।

7. जाति प्रथा :- जाति प्रथा भारत का मूल रोग है। जिस कारण समाज परस्पर विरोधी गुटों में बंटा हुआ है तथा समय-समय पर वर्ग संघर्ष जन्म लेते रहते हैं। राजनीति पर भी यह जाति प्रथा हावी रहती है। महर्षि दयानन्द ने वेदों के अनुसार वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन करके जाति प्रथा के समूलोच्छेद का प्रयत्न किया । ऋषि के बाद भी आर्य समाज ने इस दिशा में कार्य किया । तथापि पूर्ण सफलता अभी भी नहीं मिल पायी।

जातिवाद के विरूद्ध आर्यसमाज ने 'जात-पात तोडक मण्डल' की स्थापना की थी। इस मण्डल ने एक बार डॉ. अम्बेडकर को भी आमन्त्रित किया था, किन्तु उन्होंने अपने भाषण में लिख भेजा कि जब तक गुण-कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था भी समाप्त नहीं होती, तब तक जात-पात का उन्मूलन असंभव है। इस मण्डल के सूत्रधार भी सन्तराम बी.ए. ने डॉ. अम्बेडकर से ये शब्द हटाने को कहा तो उन्होनें मना कर दिया । अतः उन्हें लाहौर स्टेशन से ही वापस लौटना पड़ा ।

8. शराब आदि व्यसनों से मुक्ति :- आर्यसमाज ने धूम्रपान, शराब तथा मांसाहार जैसे घृणित एवं पापपूर्ण कार्यो के विरुद्ध प्रचार करके समाज को इन दोषों से मुक्त किया है। ये तीनों रोग जनता में महामारी की तरह व्याप्त है। सरकारी स्तर पर भी इनको प्रोत्साहन ही दिया जाता है। समाज में नाना रूपों में होने वाले अपराधों में शराब का प्रमुख स्थान है। आर्यसमाज के प्रचार से पर्याप्त लोगों ने इन व्यसनों से मुक्ति पाकर अपने धन, स्वास्थ्य एवं जीवन की रक्षा की है। पराधीन भारत में शराब से मुक्ति का दृढ़ संकल्प किया गया था। आज वह बुराई कई गुना बढ़ गई है। इस विषय में आर्यसमाज के प्रहरी पं. प्रकाशवीर शास्त्री ने लिखा था कि ''आर्यसमाज जैसे समाज सुधारक संगठन मजबूती से यदि इस ओर लग जाएं तो समाज और सरकार दोनों को ही सही रास्ते पर आना पड़ेगा।'' आगे शास्त्री जी पुनः लिखते है कि ''कृत संकल्प होकर यदि आर्यसमाज ने इस बुराई को दूर करने का बीड़ा उठा लिया तो भावी भारत उसका ऋणी रहेगा।''

9. पाखण्ड से मुक्ति :- महर्षि दयानन्द के समय भारतवर्ष नाना प्रकार के पाखण्डों से ग्रस्त था। इनमें से कुछ तो धर्म के नाम पर प्रचललि थे तथा कुछ को अज्ञानवश जनता ने स्वीकार किया हुआ था। मृत पितरों को श्राद्ध-तर्पण, गंगास्नान से मुक्ति मानना, तिलक-छाप, देवता को बलि देना आदि-आदि कार्य धर्म के नाम पर होते थे तो दूसरी ओर भूत-प्रेत का भय देकर पाखण्डी लोग भोले-भाले लोगों को गंडा-ताबीज देकर ठगते रहते थे । यद्यपि यह सब धार्मिक क्षेत्र में आर्य समाज के योगदान का विषय है, तथापि इन्होंने पूरे समाज को दूषित किया हुआ था, इसलिए इनकी स्वल्प सी चर्चा यहाँ की गई है। आर्य समाज के प्रचार से ही जनता ने जागरूक होकर इन पाखण्डों से मुक्ति पायी ।

इसी प्रकार आर्यसमाज के एक अन्य कार्य की चर्चा भी यहां आवश्यक है तथा वह है इसकी स्वदेशी की भावना । आर्यसमाज ने स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ स्वदेशी के प्रचार से भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया । 1879 में लाहौर आर्यसमाज के सभी सदस्यों ने सामूहिक रूप में स्वदेशी धारण का व्रत लिया था। इसकी खबर 14.8.79 के स्टेट्समेन में छपी थी। डी.ए.वी मैनेजिंग कमेटी के प्रधान लाल साईदास जी ने 1881 में इसके लिए आन्दोलन भी किया था। आर्यसमाज लाहौर ने ही सर्वप्रथम स्वदेशी वस्त्रों के विक्रय की दुकान खोली ।

इस प्रकार आर्यसमाज के सामाजिक क्षेत्र में व्याप्त बुराईयों को दूर करने एवं जनता का जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए क्रान्तिकारी कार्य किया है। इस विषय में जवाहर लाल नेहरू कहते हैं कि ''आर्यसमाज ने लड़के तथा लड़कियों की शिक्षा के प्रसार स्त्रियों की दशा के सुधार और दलितों के उद्धार का बहुत अच्छा कार्य किया है।''

इन सबके अतिरिक्त एक पक्ष और भी है जिसके माध्यम से आर्य समाज ने सामाजिक क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान दिया है। यद्यपि यह क्षेत्र परोक्ष एवं व्यक्तिगत है। सम्भवतः इसीलिए इसकी चर्चा नहीं की जाती है। यह पक्ष है आर्यसमाज के सामुहिक आचरण का। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आर्य समाज के सदस्यों का जीवन अंन्यों की अपेक्षा दुर्गुणों एवं व्यसेनों से रहित शुद्ध-पवित्र होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आर्यसमाज के बाहर इस प्रकार के व्यक्ति नही हैं । अवश्य हैं, तथा वे सभी वन्दनीय हैं। मेरा कहना केवल इतना है कि यदि प्रतिशत निकाला जाए तो आर्य परिवार ही इस कसौटी पर अधिकांश में खरे उतरेंगे। आर्यसमाजी व्यक्ति प्रायः धूम्रपान, मद्यपान, मांसाहार, रिश्वत, हत्याएं, अनैतिक सम्बन्ध, आर्थिक घोटाले आदि सामाजिक बुराईयों से अछूते ही रहते हैं। समाज को ये बुराईयां ही रसातल में ले जाती है। आर्यजन अपने व्यक्तिगत तथा परिवारिक जीवन को शुद्ध-पवित्र रखकर समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं । आर्यो के अन्दर अर्थ शुचिता तथा चरित्र सम्बन्धी दृढ़ता भी है। इनके परिवारों में दहेज आदि के कारण कुल वधुओं पर अत्याचार नहीं किये जाते तथा न ही उन्हें झौंका जाता है। भ्रूण हत्या जैसे जघन्य कामों से भी ये अछूते हैं। आर्य सन्तति **''अनुव्रतः पितुः पुत्रः''** का अनुगमन करते हुए अपने माता-पिता की सेवा करती है। इस प्रकार आर्यो का जीवन दुर्गुण-दुर्व्यसन रहित तथा सुख पूर्ण है। इस प्रकार परोक्ष रूप में समाज के लिए आर्यसमाज का यह भी महत्वपूर्ण योगदान है।

बी- 206, सरस्वती विहार, दिल्ली 34

सगच्छध्वं स्मारिका से साभार

..........***..........

वर्तमान परिवेश की ज्वलन्त समस्याएँ और आर्य समाज

प्रो. (डा.) सुन्दरलाल कथूरिया डी. लिट् ।।

गतांक से आगे ....

गुरूडम की समस्या ने भी आज भयावह रूप धारण किया है । तथाकथित धर्म गुरूओं की बाढ़ सी आ गई है जिनकी कृपा आशीर्वाद और दर्शनों के लिए सुपठित और अनपढ़ जनता अपना सर्वस्व लुटा रही है । उनके प्रवचनों पर लाखों करोड़ों रुपये खर्च किये जा रहे हैं । कई गुरूओं के आश्रम हत्याओं, बाल-हत्याओं, यौन-शोषण आदि के चलते चर्चा में बने हैं और उन पर आपराधिक मामले दर्ज भी हुए हैं, जो आज भी चल रहे हैं । ऐसे गुरूओं के पास आज देश-विदेश में अकूत धन सम्पत्ति है और यदि किसी गुरू का निधन हो जाता है तो उसके उत्तराधिकार और चल अचल सम्पत्ति के कई दावेदार उठ खड़े होते हैं । भोली-भाली जनता आत्मिक शान्ति, तनाव मुक्ति और समस्याओं के समाधान के लिए गुरूओं की शरण में जाती है, पर कई बार बहुत से भक्तों की समस्याएँ और बढ़ जाती हैं तनाव बढ़ जाता है और आत्मिक शान्ति भंग हो जाती है । देखा तो यहाँ तक भी गया है कि कई तथाकथित आर्यसमाजी और पदाधिकारी भी अन्ध श्रद्धा के कारण ऐसे गुरूओं के चंगुल में फंसे है और समर्पण-भाव से उनकी सेवा में जुटे हैं ।

जैसे ऋषिवर दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में विभिन्न मत-मतान्तरों के बारे में नीर-क्षीर विवेक से लिखा है और उनके बारे में जनता को जागरूक किया है, उसी प्रकार आज जो नये नये मत मतान्तर गुरूडम के चलते उठ खड़े हुए हैं, उन पर आर्य विद्वान अपनी लेखनी चलाएँ और सत्यासत्य को उजागर करें । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से ऐसे ओजस्वी विद्वानों का एक मंडल गठित करे जो निर्भीकतापूर्वक इन नये मत मतान्तरों की समालोचना के लिए तैयार हों । इनमें से एक-एक, दो-दो या तीन-तीन विद्वानों के दल को किसी एक मत के सत्यासत्य के निर्णय के लिए लगाया जाए, जो गहराई से उसकी तह तक जाकर निष्पक्ष रूप से नीर-क्षीर को उजागर करें । इस कार्य के लिए शास्त्रार्थ की पुरानी पद्धति को भी पुनरूज्जीवित करना हितकारी हो सकता है । साप्ताहिक सत्संगों मे प्रवचन करने वाले धर्माचार्यों को भी इस दिशा में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है ।

अन्य ज्वलन्त समस्याएँः- वर्तमान विसंगत परिवेश की कुछ और ज्वलन्त समस्याओं का मैं संकेत भर कर रहा हूं । वे हैं - जाति, सम्प्रदाय, और प्रदेशवाद की समस्या, राष्ट्रीय चेतना के अभाव की समस्या, युवावर्ग को आर्यसमाज से जोड़ने और उनमें आस्तिकता की भावना पैदा करने की समस्या, मानव मूल्यों के विघटन की समस्या, विदेशी वस्तुओं के प्रति आकर्षण की समस्या, बन्धुआ मजदूरी की समस्या, बाल-शोषण की समस्या, गंगा-यमुना-नर्मदा-गोदावरी आदि नदियों के परिशोधन की समस्या, कुपोषण की समस्या, धर्मान्तरण की समस्या, मन्दी की समस्या, मिलावट की समस्या, अस्पृश्यता, बाल-विवाह, विधवाओं के पुनर्विवाह एवं ऑनर किलिंग की समस्या, दहेज की समस्या, टूटते-बिखरते परिवारों एवं वृद्धजनों के एकाकीपन की समस्या आदि । यों इन समस्याओं की सूची और भी बड़ी हो सकती है, पर विस्तार-भय से शिक्षा-जगत् से जुड़ी या इसी प्रकार की और बहुत सी सामाजिक समस्याओं जैसे कि कन्या-भ्रूण हत्या आदि का उल्लेख मैंने नहीं किया है । इनमें से प्रत्येक बिन्दु पर अलग अलग लेख लिखे जा सकत हैं और एक पूरी पुस्तक तैयार की जा सकती है ।

मेरा विश्वास है कि इन सभी समस्याओं का समुचित समाधान केवल आर्यसमाज के पास है । जन-जागृति के व्यापक अभियान के द्वारा यह संभव है । इसके लिए यह भी आवश्यक है कि सभी आर्य संस्थाएं आपसी मतभेदों को भुलाकर एक जुटता से कार्य करें तथा मनुर्भव के साथ शुद्ध ज्ञान,शुद्ध कर्मो और शुद्ध उपासना का सन्देश जन-जन तक पहुंचाएँ । प्रभु करे कि भारत फिर से विश्वगुरू बने और यहां भारती की गुंजार सुनाई दे - 'हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी, आओ विचारें आज मिल कर ये समस्याएं सभी, मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारे आरती, भगवान भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती ।' (भारत भारती)

बी - 3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली

वैदिक समाज व्यवस्था एवं विश्वबन्धुत्व

– डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

संसार आज ऐसी समाज व्यवस्था की खोज में है जिसमें उसे शान्ति मिल सके । गरीबी–अमीरी का संघर्ष न हो और सभी मानवमात्र समान भाव से उन्नति करते हुए आनन्दमय जीवन बिता सकें।

वस्तुतः वैदिक समाज व्यवस्था ऐसी सुन्दर व्यवस्था है जिसके द्वारा हम सब सुखी, सम्पन्न और कल्याणकारी मार्ग पर बढ़ सकते हैं।

उन्नति के लिए सब लोगों में असंबाध अर्थात् द्वेष की भावना नहीं होनी चाहिए। किसी भी प्रकार का झगड़ा नहीं होना चाहिए। परस्पर विचार विषमता के कारण झगड़े उत्पन्न होते हैं। जन्म से एक उच्च और दूसरा हीन है, इस प्रकार की विषमता ऊंचाई नीचाई का क्षुद्र भाव जहां होगा वहां अवश्य झगड़ा होगा । समता से झगड़े मिट जाते हैं। विषमता से उत्पन्न होते हैं ।

वेदों की सर्व प्रथम विशेषता यही है कि इसमें प्राणी मात्र के कल्याण की भावना निहित है। वेद में मानवमात्र को **''मनुर्भव''** का पाठ पढ़ाया है। ऋग्वेद 10.53.6

ऐ मनुष्य ! तुम सच्चे अर्थों में मनुष्य बनो। जीवन में मानवीयता की पहचान करो। दुनिया में जितने श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थ हैं उनकों जीवन में धारण करो। एक एक व्यक्ति के निर्माण से ही समाज बनता है। उत्तम समाज से ही उत्तम राष्ट्र बनता है। हम न केवल अपने आस पड़ोस, समाज और राष्ट्र में ही शान्ति की कामना करें अपितु विश्व समाज में सबके कल्याण की कामना करें। इसलिए यजुर्वेद 36.18 में कहा है – **'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'** हम एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखते है। सब दिशा उपदिशाओं में प्राणी मेरे मित्र बन जायें। 'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु' अथर्व. 19.15.6 सबके प्रति मित्रता पूर्ण व्यवहार – हम किसी के भी साथ द्वेष, छलकपट, हिंसा, इत्यादि कुटिल भावनाओं से युक्त आचरण न करें– **'मा नो द्विक्षत कश्चन'** अथर्व 12.1.24। हम एक दूसरे की सहायता तथा सब ओर से परस्पर रक्षा की भावना स्थापित करें। **'पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः'** ऋगृ 6.75.14 । वैदिक समाज व्यवस्था में परस्पर समानता समीपता, सामञ्जस्य सौहार्दपूर्ण वातावरण था। मानव मात्र में न कोई ज्येष्ठ बड़ा है न कोई छोटा सब परस्पर आपसी भाईचारे के समान परस्पर व्यवहार किया करें। शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति का अधिकार प्रत्येक को था इस विषय में ऋग्वेद का कथन द्रष्टव्य है –

ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमासो मतसा वि वावृधुः।
ऋ. 5.56.61

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातारो वावृधुः सौ भगाय।
ऋ. 5.60.5

साथ ही मानवमात्र को सहृदयता, संमनस्कता और परस्पर द्वेष न करने का पाठ पढ़ाकर एक दूसरे से उसी प्रकार प्रेम करने का पवित्र उपदेश है जैसे गौ अपने शिशु से प्रेम करती है –

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः ।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या।। अथर्व 3.30.1

इसी आधार पर मनुष्यों के प्रति वेद का निर्देश है कि शूद्र और आर्य सबका प्रिय (कल्याण) देखें – प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे उतार्ये अथर्व. 19.62.1। यहां पर आर्य शब्द से किसी जाति विशेष, देश विशेष या स्थान विशेष का वर्णन नहीं है। वेद में मनुष्यमात्र के केवल दो भेद किये हैं – **आर्य और दस्यु–विजानीह्यार्यान् ये च दस्यवो'** – ऋ 1.57.8।

ये दोनों गुणवाचक नाम हैं। आर्य–श्रेष्ठ सदाचारी। दस्यु वह है, जो दूसरों के कर्मो में बाधा पहुंचाता है उन्हें नष्ट करता है क्षीण करता है। दस्यु उस व्यक्ति की संज्ञा है जो कर्महीन, आलसी और मानवीय गुणों से रहित हो।

अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुरन्यव्रतो अमानुषः।ऋ. 10.22.8 ।

इस प्रकार वैदिक विचारधारा में आकर जाति, वर्ण, ऊंच नीच, देश आदि के भेद समाप्त हो जाते है। मनुष्य मात्र की रक्षा केवल इसलिए की जानी चाहिए क्योंकि वह मनुष्य है। यही व्यापक विश्वपरिवार की भावना है । यह व्यापक भावना न तो जातिभेद के आधार पर है और न वंश परम्परा की सीमित परिधि के भीतर ।

वेद में किसी जातिविशेष, धर्मविशेष, या मतविशेष को सम्बोधित नहीं किया गया है अपितु सामान्य मनुष्यमात्र यहां सम्बोधित है – **शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः,** यजु 11.5.।

'**उद्यानं ते पुरूष नावयानम्**' अथर्व 8.1.6.।

ऐ मनुष्य! जीवन में सर्वाङ्गीण उन्नति करने के बारे में सदा चिन्तन, मनन, करते रहना । कभी अवनति को प्राप्त न होना। वेदों में समस्त मानव समाज को मन-वचन कर्म से संगठित होकर रहने का उच्चतम व्यवहारिक उपदेश दिया गया है -

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।

ऋ. 10.191.2

समानी प्रपा सह वोऽन्नभगः। अथर्व 3.30.6

वेद की अधिकांश प्रार्थनाओं में बहुवचन के प्रयोग से ही यह बात स्पष्ट है कि वेद समष्टिगत विचारधारा को लेकर चलता है जैसे प्रसिद्ध गायत्री मंत्र में हम सबकी बुद्धियों को प्रेरित करने की प्रार्थना है - **धियो यो नः प्रचोदयात्** । यजु. 36.1। '**यद् भद्रं तन्न आसुव**' यजु. 30.3

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् - यजु. 40.16

इस प्रकार किसी भी समाज की उन्नति के लिए यह समष्टि भावना कितनी उपयोगी है हम सब इस बात से भलीभाँति परिचित हो सकते हैं। समस्त मानवजाति में परस्पर भद्र-भावना (कल्याण) होनी चाहिए । विशुद्ध कर्तव्य बुद्धि से काम करना वास्तविक कल्याण भावना है - **भद्रं कर्णेभि शृणुयाम देवाः** यजु. 25.21 ।

आ नो भद्राः कतवो यन्तु विश्वतः। यजु. 25.14

वैदिक समाज व्यवस्था में आशावाद, पुरूषार्थ, कर्म करने की सतत् प्रेरणा के दिग्दर्शन होते हैं, निराशावाद, अकर्मण्यता, भाग्याधीन होकर बैठे रहना, कर्म न करने की भावना, इत्यादि के लिए कोई स्थान नहीं । समस्त वैदिक साहित्य आशावाद के ओजपूर्ण भावों से परिपूर्ण है- **तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात्** मन्त्र में सौ वषर्व तक अदीन होकर जीने की प्रार्थना की गई है। वैदिक साहित्य सागर में अन्तः प्रवेश करते ही आशावादी तेजस्वी जीवन का उल्लास दिखलाई पड़ता है - भाई भाई से द्वेष की भावना न रखें, बहिन बहिन से द्वेष की भावना न हो, सम्यक् प्रीति, प्रसन्नता, उल्लास, उमंग, तेजस्विता, कर्म, ज्ञान, भक्ति, प्रेम, दया, उदारता, करूणा, यम, नियमों का पालन आदि गुणों से युक्त होकर मंगलदायक रीति से एक दूसरे के प्रति मधुर व्यवहार, तथा मधुर वाणी का प्रयोग समाज व्यवस्था में सुख शान्ति, विश्व बन्धुत्व की भावना को दर्शाती है -

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् वाचं वदत भद्रया। अथर्व. 3.30.3

संपूर्ण मानव समाज में कोई निर्धन न हो, भूखा न हो, सबको समान अवसर प्राप्त करने का अधिकार हो। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा दी गई है -'**तेन त्यक्तेन भुंजीथा**' यजु. 40.1. समस्त पदार्थो को त्यागपूर्वक भोगने की बात कही गयी है। जो व्यक्ति पदार्थो का उपयोग व उपभोग बिना बांटकर केवल अकेले ही अपने लिए भोग करने की भावना रखता है ऐसा व्यक्ति केवल पाप का भोग करता है - **केवलाघो भवति केवलादी** ऋ. 10.117.6। उस देवी शक्ति ने समस्त पदार्थ प्रत्येक प्राणीमात्र को प्रदान किये हैं वही शक्ति चराचर में व्याप्त है - **ईशा वास्यमिदं सर्वम्।** यजु.40.1। एक व्यक्ति समस्त पदार्थो का भोग करे तथा दूसरे को भूखा सोना पड़े तो क्या सुन्दर समाज की कामना की जा सकती है इसी के लिए इष्ट और आपूर्त कर्मो का विधान वेद में बतलाये हैं, जैसे विद्यादान, विद्यालय खुलवाना, औषधि, वनस्पतियों का संरक्षण, संवर्धन, यह उदार भावना ही उन्नत समाज का निर्माण करती है । '**उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते संसृजेथामयंच।**' - यजु .15.54. ।

वैदिक समाज व्यवस्था में समाज की कामना एक सुगठित शरीरधारी पुरूष के रूप में की गई है। जिस प्रकार शरीर के सभी अंग उत्कृष्ट हैं कोई अंग किसी अंग से कम मूल्य वाला नहीं है। ऐसे ही समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन वर्णो में न कोई ऊंचा है, न कोई नीचा । शूद्र वर्ण निकृष्ट नहीं, हेय नहीं अपितु संपूर्ण समाज का आधार है। वह अपने शिष्य द्वारा, श्रम के द्वारा आवश्यक साधनों, उपकरणों को समाज के सभी वर्गो के लिए उपलब्ध कराता है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।

ऋ. 10,90-12, अथर्व, 19.6.6

इस प्रकार वैदिक समाज वर्ण व्यवस्था का आधार गुण कर्म है, जाति नहीं । सबकी समान आवश्यकता है, सबका महत्व है, ऊंच-नीच का भेद भाव नहीं । कोई गर्हित नहीं, कोई अस्पृश्य नहीं। परमेश्वर से चारों वर्णो में दीप्ति प्रकाश मान होने की प्रार्थना की गई है -

रूचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रूचं राजसु नस्कृधि
रूचं वैश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रूचा रूचम् ।।

यजु. 18.48

समाज में सभी कार्य करने वालों का समान महत्व है, सबका एक जैसा सम्मान है। इसीलिए प्रस्तुत मन्त्र में बढ़ई, रथ

निर्माता, कुम्हार, लोहार, निषाद (मछुआरे) शिकारी आदि सबको नमस्कार किया गया है –

'नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्चि वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमः'। यजु. 16.27 ।

वस्तुतः सबकी समान समृद्धि से ही पूर्ण समाज, राष्ट्र तथा मानव मात्र की समृद्धि सम्भव है। समाज के सभी अंगों के स्वस्थ रहने पर समाज उचित दिशा में वान्छित प्रगति कर सकता है। वैदिक समाज व्यवस्था में पुरुष के समान नारी को भी उत्कृष्ट स्थान दिया गया है। वह अधिष्ठात्री है, अदिति है, अखण्ड शक्ति है। मैं स्वयं राष्ट्रशक्ति हूँ, वह जिसे चाहे उसे प्रतिष्ठित कर देती है।

अहमेव स्वयमिदं वदामि.. यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि

ऋ. 25.5 ।

उसे घर का समाज्ञी बतलाया गया है– सम्राज्ञी श्वसुरे भव (अथर्व 14.1.22) पति पत्नी में परस्पर अत्यन्त दृढ़ प्रीति व अनुराग बना रहे । **चक्रवाकेय दम्पती** अथर्व 14.2.64। पुत्र पुत्रियाँ वीर हों, तेजस्वी, वर्चस्वी, यज्ञस्वी हों – **मम पुत्राः शत्रुहणः** ऋ.10.159.3 गृहस्थ जीवन कल्याणकारी हो । सम्पूर्ण आयु नीरोग स्वस्थ बनकर पुत्र पौत्रों के साथ आनन्द से परिपूर्ण रहें – **इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्** । (ऋ. 10.85.42)

समाज के सभी व्यक्ति परिश्रमी हों, आलसी व प्रमादी न हों, कर्मशील व ज्ञानशील दोनों का समन्वय जीवन में करें – **कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो में सव्य आहितः** (अथर्व. 7.52.8)। **कुर्वन्नेवेह कर्माणि।** यजु. 42.2 ।

अथर्ववेद के तृतीय कांड के 30 वें सूक्त के 5 पञ्चम मन्त्र में वैदिक आदर्श समाज व्यवस्था के मूल भूत सिद्धान्तों का विशद रूप से वर्णन मिलता है।

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट, संराधयन्तः स धुराश्चरन्तः। अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः सं मनसस्कृणोमि।।

मन्त्र का एक एक शब्द बहुत ही गम्भीर रहस्यात्मक बातों का दिग्दर्शन कराता है। सर्वप्रथम संकेत है –

1. 'ज्यायस्वन्त' :– समाज के सभी मानव मात्र के मनों में एक दूसरे के प्रति आदर एवं सम्मान की भावना होनी चाहिए। **आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।** कभी कोई भी व्यक्ति अपने को हीन भावना से ग्रस्त न समझे । समाज व्यवस्था में सबको प्रगति, शिक्षा, स्वास्थ्य, जीविकोपार्जन्, निवास, खान–पान, आदि मूलभूत सुविधाओं के समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए।

2. चित्तिनः – वैदिक समाज व्यवस्था में ज्ञान प्राप्ति के अवसर सबको सुलभ होने चाहिए । सभी लोग ज्ञानवान् हों, कर्मशील हों, **"तमसो मा ज्योर्तिगमय"** की भावना से ओतप्रोत हों।

3. मा वियौष्ट :– इस समाज व्यवस्था में सब लोग प्रीतिपूर्वक आपस में बरतें। कभी कोई अपने आपको हीन भावना से ग्रस्त न समझें। ऊंच नीच की भावना को समाप्त करें। समाज , राष्ट्र, परिवार सबके कर्त्तव्यपूर्ण अधिकारों का संरक्षण हों।

4. संराधयन्तः – एक दूसरे की उन्नति में ही सबका कल्याण सम्भव है। एक व्रत, एक संकल्प, एक मानवजाति, व्यष्टि उन्नति से ही समष्टि का कल्याण, हित सम्भव है।

5. सधुरा :– परिवार, समाज या किसी भी राष्ट्र की उन्नति में सबका सहयोग, कर्तव्यभावना, निष्ठा की अत्यन्त आवश्यकता होती है। जैसे किसी पहिये में अनेक अरे मिलकर गतिमान हो उठते है ऐसे ही समाज में सभी की सक्रियता; सहयोग, परिश्रम, उद्यमशीलता से ही सामाजिकोन्नति सम्भव है।

6. चरन्त :– गतिशील जीवन जीने की कामना प्रत्येक व्यक्ति में होना चाहिए । गति ही जीवन का आधार है। सभ्य समाज का निर्माण सबकी प्रगति में ही छिपा है।

7. अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त :– समाज में सभी के प्रति मधुरता का व्यवहार । आपसी भाईचारा, परस्पर की एकता, अखंडता, में ही सबका कल्याण निहित है। दंगा, फसाद, लड़ाई, व्यर्थ, वादविवाद, इत्यादि सब कुत्सित वाणी, के प्रयोग करने के कारण ही दिखाई देते हैं। अतः माधुर्यमय जीवन की कामना इस मंत्राश में छिपी है।

8. एत– समस्त मानवजाति की परस्पर एकता । आज भी हमारे मानव समाज में साम्प्रदायिक जातीय संघर्ष, असहिष्णुता, स्वार्थपरता, कर्त्तव्य की उपेक्षा, प्रान्तीय एवं क्षेत्रीय विद्वेष, भाषा सम्बन्धी समस्या, राष्ट्रीय भावना का अभाव, छल, कपट, झूठ, बेईमानी, जैसी कुरीतियां व्याप्त हैं इनका समूल उन्मूलन परस्पर की एकता से ही सम्भव है। हम दूसरे के निकट आने का प्रयत्न करें, न कि आपसी वाद–विवादो मे में उलझते रहें। वेद का मानव मात्र को सन्देश प्रेरणा है। ऐ दुनिया के लोगों–परस्पर की क्षुद्र भावनाओं को त्यागकर एकता के बन्धन में बंधने का प्रयत्न करो।

9. **सधीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि** – सबका लक्ष्य एक, परस्पर मिल जुलकर कर्त्तव्य कर्म करने की भावना सबकी समान हो। यही भद्र भावना ऋग्वेद के संगठन सूक्त में दिखलाई देती है –

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।

उपरोक्त कतिपय सिद्धांतों की चर्चा अथर्ववेद के इस मन्त्र में स्पष्टता से दिखलाई देती है। यद्यपि यह कार्य अत्यन्त कठिन प्रतीत होता है तथापि वेदों का यह सन्देश सबके कल्याण के लिए उपदिष्ट है। यदि हम इस पर चलने का प्रयत्न करेंगे तो निश्चित रूप से सम्पूर्ण मानव समाज एकता अखण्डता के सिद्धान्तों में बंधकर सबका, प्राणीमात्र का कल्याण कर सकता है।

वैदिक समाज व्यवस्था में सदा से ही "**सर्वभूत हिते रताः**", "**वसुधैव कुटुम्बकम्**", "**सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय**", इत्यादि का पवित्र सन्देश छिपा है। हमारे ऋषि महर्षियों ने दैशिक दृष्टि National view को तुच्छ समझते हुए मानव मात्र को भाई बन्धु के रूप में ही पहिचाना **माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः** अथर्व. 12.1.1

नमो मात्रे पृथिव्यै, 'मनुर्भव' इत्यादि मन्त्रोपदेश और निर्देश हमारी संस्कृति को संसार के उच्चतम शिखर पर ले जाते हैं तभी ऋषि का यह उद्घोष सार्थक प्रतीत होता है– **सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववाराः** यजु.।

सारांश में हम कह सकते हैं– वैदिक समाज व्यवस्थाएं उज्ज्वलतम प्रेरणाएं देने वाली हैं। इसमें सर्वत्र सद्‌गुणों एवं सत्कर्मों का समन्वय दिखाई देता है। वस्तुतः यह व्यवस्था हमारी सभ्यता, संस्कृति, दर्शन, आचार, मर्यादाओं आदि का आधार है, जिसके बिना हम खड़े नहीं हो सकते । आज पाश्चात्य देश अत्याधिक भौतिक उन्नति करने पर भी अशान्ति और असुरक्षा का अनुभव कर रहे हैं। यदि भारत को इस अशान्ति से बचाना है तो उसे अपने स्वरूप को बनाये रखना होगा तथा विश्व समुदाय को बचाना है तो वैदिक समाज के आदर्शों का अनुसरण करके सामाजिक सन्तुलन स्थापित करना होगा। सबके अन्दर शिक्षा, परिश्रम, कर्त्तव्य भावना, बुद्धि की प्रतिष्ठा करनी होगी। नारी का यथेष्ट सम्मान करना होगा। जातिवाद, छुआछूत, परस्पर की घृणा, द्वेष, अशान्ति, ऊंच–नीच की भावना, इत्यादि अनेक कुरीतियां छोड़कर शोषित वर्ग के साथ समानता का व्यवहार करना होगा। तभी विश्वसमाज में सबका कल्याण हो सकता है। वैदिक समाज व्यवस्था की पूर्ण झलक इस मन्त्र में भी देखी जा सकती है – **आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्** यजु.22.22।

इस प्रकार यह वैदिक सामाजिक व्यवस्था मानवमात्र को आपस में जोड़ने का काम करती है, न कि तोड़ने का । यह बिखरे हुओं को एक करती है। नैराश्यमय जीवन में आशावाद का संचरण करती हैं । मानवमात्र का सर्वाङ्गीण विकास करने में सक्षम व समर्थ है। व्यक्ति निर्माण से समाज का निर्माण, सभ्य समाज से ही राष्ट्रोन्नति सम्भव है। इस निधि को किसी वर्ग विशेष से या किसी जाति विशेष से नहीं जोड़ा जा सकता । यह मानवमात्र की संपत्ति है। इसे उसी परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयत्न होना चाहिए।

सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी

संगच्छध्वं स्मारिका से साभार

...........***...........

आर्य समाज का छटवां नियम

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना

आर्यों ! निद्रा त्यागो ! अंगड़ाई लो !

–शकुन्तला आर्या (पूर्व महापौर दिल्ली)

शताब्दियों तक मां भारती यूनानियों, ईरानियों, तुर्कों आदि विदेशी आक्रामकों की बर्बरता के तांडव नृत्य से शोषित हुई। सिकंदर, महमूद गजनवी, मुहम्मद गौरी, तैमूर लंग, चंगेज खान, अहमद शाह अब्दाली, नादिरशाह दुर्रानी आदि विदेशी हमलावरों ने भारत की सरजमीं पर इतने जुल्म किये कि समस्त मानवता कांप उठी। मुगल कालीन बाबर से लेकर औरंगजेब तक और उसके बाद भी प्रताड़ना और अत्याचारों का दौर चलता रहा। सोने की चिड़िया के पर कुतरने के लिए अनेक विदेशी आक्रामकों ने इसे हजारों हाथों से जी भर कर लूटा ।

अंग्रेज भारत में व्यापारी बन कर आये और शासक बन कर बैठ गये । अपने दासत्व काल में शोषित मातृभूमि उर्वरा होने के बावजूद भी उजाड़ थी और अपने बेटों को भरपेट भोजन देने में असमर्थ थी क्योंकि देश के जन मानस द्वारा प्रदत्त संपदा उत्पादित वस्तु और धन सभी कुछ सात समुद्र पार बैठे गौरांग बटोर कर ले जाते थे। अंग्रेजों की लूट खसोट और अत्याचार के विरोध में स्वातंत्र्य समर 1857 के दीवानों ने शताब्दी से जड़ जमाये हुए दासता के विष वृक्ष को समूल उखाड़ कर फेंकने का प्रयास किया ।

सन 1857 की प्रथम महान क्रांति असफल होने पर अंग्रेजी सेना द्वारा देशद्रोहियों के सहयोग से आजादी की लड़ाई के रण–बांकुरों को बुरी तरह कुचला गया, वह मानवता के भव्य ललाट पर एक अमिट कलंक ही कहा जाएगा। यही कारण था कि क्रांति की असफलता के बाद स्वाधीनता का नाम लेने वाला कोई नहीं रह गया था। ऐसी विषम परिस्थितियों में भयानक विघ्न बाधाओं को पराजित करता हुआ भारत मां का एक अजेय सपूत योगी भारत के कोने–कोने में घूम कर तिमिराच्छादित नभोमंडल में नव जागरण की रश्मियां बिखेरने का प्रयास कर रहा था, वह था महर्षि दयानन्द सरस्वती । उन्होंने अपनी विद्वता, वाक् चातुर्य तथा अकाट्य तर्क शक्ति के माध्यम से भारत की सोई आत्मा को जगाया। लोगों ने उस महान क्रांतिकारी की आवाज को सुना, अपने स्वत्य और महत्व को पहचाना और सदियों से पड़ी गुलामी की जंजीरों को काटने के लिए भारतवासी मचल उठे। परिणामतः भारतीय जनशक्ति ने इतिहास के पृष्ठों पर भारत के स्वतंत्र गौरवशाली स्वरूप को प्रस्तुत किया।

1857 से 1947 तक देश के नवयुवकों ने स्वतंत्रता आंदोलन के महान यज्ञ में स्वजीवन की आहुति देकर सक्रिय भूमिका अदा की। भरी जवानी में पारिवारिक सुख सम्पत्ति और ऐश्वर्य को ठुकरा कर जेल की काल कोठरियों में सड़ने, काला पानी में हड्डियां गलाने तथा फांसी के फंदों को चूमने के लिए हजारों नर नाहर पराधीनता के जुए को उतार फेंकने के लिए वंदे मातरम् का गीत गाते हुए सड़कों पर उतर आए। मां भारती को श्रृंखला करने के लिए असंख्य नवयुवकों ने हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग किया था। करोड़ों अज्ञात वीर जो स्वतंत्रता की बलिवेदी पर न्योछावर हुए हैं, आज संसार उनके नाम से भी परिचित नहीं है। न उनकी कोई समाधि है और न ही इतिहास के पन्नों पर अंकित उनका नामोनिशान । किंतु उन अज्ञात योद्धाओं का बलिदान किसी बड़े से बड़े नेता से कम नहीं हैं। इन बलिदानियों में 80 प्रतिशत महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे, जिन्होंने अपने गर्म–गर्म रक्त से भारत मां के माथे पर तिलक किया था।

देश की आजादी के बाद राष्ट्रीय भावनाएं शिथिल होती जा रही हैं। धर्म निरपेक्षता की निरंतर दुहाई ने देश की आधार शिला को खोखला कर दिया है। धर्म निरपेक्षता के नाम पर बच्चों को अपना गौरवमय इतिहास पढ़ाना बंद कर दिया है। राष्ट्रीयता तथा नैतिक मूल्यों की प्रेरणा के अभाव में पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण की दौड़ में युवा पीढ़ी भटकती जा रही है। आजादी के 59 वर्ष बीतने के उपरांत भी हमारे देश के स्कूलों में हमारी मानसिक गुलामी के प्रतिफल यह पाठ पढ़ाना कितना व्यर्थ और निराधार है कि 'आर्य लोग मध्य एशिया से आए'। अंग्रेजों द्वारा लगाये इस आक्षेप के पीछे तो उनकी स्वार्थ सिद्धि थी कि वह भारतीयों के रोम–रोम में रमी हुई स्वदेश भक्ति की भावना का उन्मूलन करना चाहते थे और यह सिद्ध करना चाहते थे कि जैसे आर्यों ने बाहर से आकर भारत पर अधिकार कर लिया था, वैसे ही हमें भी भारत पर अधिकार करने का अधिकार है।

अंग्रेजों की दास वृत्ति वाले लोगों से मेरा एक ही प्रश्न है कि क्या मध्य एशिया में हमारा एक भी तीर्थ है ? हमारा तो सब कुछ इसी देश में है। यहीं परमात्म देव ने सर्वप्रथम अपनी सृजन कला

का चमत्कार दिखाया । यहीं पर आदि सृष्टि में ईश्वर ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा, चारों ऋषियों के हृदय में वैदिक ज्ञान की ज्योति जगाई। यहीं पर गौतम, कपिल कणाद, पतंजलि, व्यास और जैमिनी ने दर्शनों और शास्त्रों का बोध कराया। यहीं पर मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने मर्यादित जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया । यहीं पर योगेश्वर कृष्ण ने गीता ज्ञान देकर कर्म के महत्व को समझाया । यहीं पर महात्मा बुद्ध ने मानव को मानवता का पाठ पढ़ाया । यहीं पर कुमारिल भट्ट ने वेदों की रक्षा करने का संकल्प लिया । यहीं पर छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप ने विदेश इस्लामी सल्तनत से मुक्ति पाने के लिए जीवन भर संघर्ष किया। भामाशाह के अनुपम त्यागवाला वैश्व वर्ण का राष्ट्र हितैषी स्वरूप भी यहीं देखा गया । इसी धरती के सपूत पृथ्वीराज चौहान ने शब्दभेदी बाण ने अपना चमत्कार दिखाते हुए आक्रामक के घर में उसे समाप्त किया । इसी धरती की मिट्टी के सतीत्व की रक्षार्थ महारानी पद्मिनी द्वारा प्रदीप्त जौहर ज्वाला के धू-धू करते रूप को देखा। यहीं पर महारानी दुर्गा, मदालसा, सीता, सावित्री, अनुसुईया, गांधारी और द्रोपदी आदि महान विभूतियों ने अपनी चारित्रिक श्रेष्ठता बताई । यहीं पर पन्ना धाय ने अपनी ममता को देश के ऊपर बलिदान कर दिया । यहीं पर स्वतंत्रता की अनन्य उपासिका झांसी की रणचंडी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों को लोहे के चने चबवायें।

इसी पावन धरती पर आदि कवि वाल्मीकि, भवभूति, सूरदास, तुलसी, कबीर ओर रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि संत और कवि हुए है। यहीं पर गुरू गोविन्द सिंह और वीर बंदा बैरागी ने राष्ट्र देवी की आराधना की । यहीं पर सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, वीर सावरकर, सुभाष चन्द्र बोस, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द और गांधी के बलिदान हुए । योगीराज अरविंद, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चंद्रपाल, लाला लाजपत राय और महात्मा हंसराज सरीखे महामानवों ने इसी धराधाम को दीप्त किया। इसी धरती के सपूत स्वामी विवेकानंद ने विदेशों में जाकर वैदिक संस्कृति का उन्नायक सिक्का जमाया। क्रांतदर्शिता के अग्रदूत युग चेतना के संवाहक और सर्वतोमुखी उन्नायक महर्षि दयानंद ने इसी धरती के पावन यज्ञ में 'स्व' जीवन को समिधा बनाकरा समर्पित करते हुए ''वयं राष्ट्रे जागृयाम'' का दिग्घोष किया ।

हमारा तो जो कुछ भी है सभी इसी मातृभूमि की गोद में हैं हमारा बाहर कुछ नहीं । यही हमारी जन्मभूमि, धर्मभूमि और कर्मभूमि है। ''मध्य एशियावाद' की वकालत एक योजनाबद्ध षड्यंत्र का आधार है। राष्ट्र के कर्णधारों ओर इतिहास लेखकों को इतिहास के पन्नों से यह शब्द निकालना होगा।

आज देश के ऊपर राष्ट्रीय संकट मंडरा रहे है। भारत मां के रूप लावण्य पर कामुक दृष्टि लगाये आतंकवादियों द्वारा विस्फोटक स्थिति बनी हुई है। साम्प्रदायिकता, अलगाववादी प्रवृत्तियों के साथ मिलकर हमारी मातृभूमि के टुकड़े करना चाह रही है। पाकिस्तान अपनी नापाक हरकतों से बाज़ नहीं आता। पाकिस्तान के निर्माता भारत के हितेषी नहीं, जो खाते यहां का हैं और सपने देखते है विदेशों के, वे भारत मां के पुजारी नहीं हो सकते । वे सभी देशद्रोही हैं। देश के इस संक्रमण काल में राष्ट्रीय प्रेम की अत्यंत आवश्यकता है। उसके लिए वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद और भारतीय अस्मिता की रक्षार्थ जन जागरण निमित्त आर्य समाज को अपने कर्तव्य का निर्वहन करना होगा । आर्य समाज संसार का सबसे ऊंचा, सबसे शक्तिशाली और गरिमावान संगठन है, परंतु सिंह आज सोया पड़ा है। इस महान संगठन की तंद्रा भंग नहीं हुई । जिस दिन आर्य समाज द्वारा क्रांति का अभियान प्रारम्भ होगा उसी दिन देश का कायाकल्प होना प्रारम्भ होगा, तभी महर्षि दयानन्द का विषपान अमृतपान में परिवर्तित हो सकेगा और तभी भारत मां का गौरव आर्ष सभ्यता, वैदिक संस्कृति और मान मूल्य स्थिर रहेंगे।

इस कार्य पूर्ति हेतु हमें संकल्प ग्रहण करना होगा । **''तमसो मा ज्योतिर्गमय''** का आह्वान हमारा प्रेरक बनेगा। मातृभूमि के कण-कण को पावन मान कर इसके कंकड-कंकड़ में शंकर का आविर्भाव करने का चिंतन हमें जन-जन में करवाना होगा कि स्वर्ग से भी महान हमारी मातृभूमि कोई मजहब अथवा सम्प्रदाय की नहीं है, अपितु राष्ट्रवाद की पुनीत गंगा का प्रवाह है जो **''संगच्छध्वं संवदध्वं'** के कलकल नाद से निनादित होता हुआ वह चिरन्तन स्वर है, जिसमें विभाजक प्रवृत्तियों को परास्त करने की क्षमता है। आओ ! हम राष्ट्रीयता की पुनीत गंगा को प्रवाहित करने के भागीरथ प्रयत्न को ही अपने जीवन की राह बनाएं।

...........***...........

आर्य समाज

—श्री मैथिलीशरण गुप्त

आर्यसमाज!
आर्य भूमि का अरूणोदय –सा
उठ ! उष्ण, तू सजकर साज ।।
अंधकार था चारों ओर,
देख लिया तूने चोर ।
घर में शोर मचाया घोर।
सोते स्वजनों को धिक्कार,
जमा दिया ठोकर तक मार ।
कि हो प्राप्त भय का परिहार ।
अलस प्रमादी अवसादी ।
हम थे सोने के आदी,
जागा तू भैरवावादी ।
लगे विवादी भी कुछ स्वर,
पर हम चौंक उठे सत्वर,
उतरा कुछ तो तंद्रक ज्वर ।
किया क्या तूने खंडन मात्र?
स्वयं तू था मंडन का पात्र,
गये गुरूकुल में पढ़ने छात्र ।
हुई निःशुल्क शिक्षा,
बढ़े अब वह तितिक्षा।
हिन्दू–मानस–महाराष्ट्र तू
धरे राष्ट्र भाषा की लाज ।
आर्य समाज !
आर्य समाज !
बरसावें सुरपुर कन्यायें
गाकर तुझे पर सुमन पराग
किया वही तूने विद्रोह,
पर किससे ! उससे जी मोह
छोड़ा अपनों का भी छोह !
छाई थी समाज में श्रान्ति,
अंधभक्ति दुर्गति भय भ्रांति,
कर दी तूने कर दी क्रांति!
घर था बना हाय ! घूड़ा
चमक रही थीं बस चूड़ा
तूने झाड़ दिया कूड़ा ।
उसके साथ किन्तु घर के
जाने न भूषण भी भर के
रख निज रत्न, यत्न करके ।
देखती नहीं रोष में दृष्टि,
शान्त हो झंझा, सींचें वृष्टि
ध्वंस की ज्वाला पर हो सृष्टि।
बजे सब ओर डंका,
मिटे निज मुक्ति शंका,
जिष्णु तनिक पर मत सहिष्णु हो
प्रिय पद पर विष्णु विराज।
आर्य समाज !
आर्य समाज !!
प्रभु की परम दया है तुझ पर
आ, आनंद मना तू आज ।
शोक न कर तू कर अभिमान,
कर निज वेद, विजय रस पान,
किया वीर तूने वरदान ।
विधर्मियों से घर की फूट,
करा रही थी अपनी लूट,
तू सतर्क हो उठा, अटूट ।
पर जो मुँह की खाते हैं,
मन ही मन चिढ़ जाते हैं।
छिपकर घात लगाते हैं।
सहा सभी तूने प्यार,
सिद्ध कर गये हत्यारे,
निज अविजय न्यारे – न्यारे
राम ने रक्खी, तेरी रेख,
न मुँह फेरा तूने भय देख,
लिखा निज शोणित से यह लेख.....
''कृण्धवं विश्वमार्यम्''
जयति कृतबुद्धि कार्यम्
शुद्धि वितान तले श्रद्धा का
दान किया तूने ऋषिराज ।
आर्य समाज।

स्वास्थ्य का परम शत्रु-कोष्ठबद्धता

डॉ. नागेन्द्र कुमार 'नीरज' योग योगग्राम, हरिद्वार

पेट स्वस्थ, आप स्वस्थ, पेट रोगी, आप रोगी । सारे रोगों की जड़ का आधार पेट, स्वास्थ्य का आधार पेट । स्वस्थ पेटः स्वस्थ व्यक्तिव, पेट रूग्ण, पेट विक्षिप्त व्यक्तित्व । ये कुछ ऐसे नारे है जो अनेक विख्यात अनुभवी चिकित्सकों की गहन अनुभूतियों को उद्भाषित करते हैं ।

आपका स्वास्थ्य, चिन्तन, व्यक्तित्व, आत्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, नैतिक तथा भौतिक विकास – सभी कुछ आपके पेट से जुड़ा हुआ है । विभिन्न चिकित्सा केन्द्रों तथा कैंपो में अब तक करीब 22 हजार विभिन्न समस्याग्रस्त लोगों से मेरा मिलना हुआ है।

कवि, राजनेता, अभिनेता, साहित्यिक, मंत्री, वैज्ञानिक, शिक्षक, चिकित्सक, संत, अपराधी, कलाकार, चित्रकार, वकील, व्यापारी, अभिनेत्री, प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी, उद्योगपति, पूंजीपति, निर्धन, असहाय, बाल, वृद्ध, महिला, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, सभी व्यवसाय, अनेक देश, विभिन्न प्रांत, सभी कौमों से जुड़े लोगों से मिलने का खूब अवसर प्राप्त हुआ है। इन लोगों का बारीकी से भावनात्मक एवं शारीरिक अध्ययन करने को मिला है। ये लोग भांति-भांति की पृथक-पृथक शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक समस्याओं से ग्रस्त थे । उन समस्याओं के अनेक कारण थे, लेकिन इनमें एक समानता मैंने अवश्य पायी। ये समस्याग्रस्त लोग पाचन-संस्थान संबंधी किसी-न-किसी जीर्ण रोग से अवश्य पीड़ित थे। जब उनका पेट ठीक हुआ तो उनके अन्य रोग-लक्षणों (जिससे वे पीड़ित थे) में आशातीत कमी पाई गयी, वे धीरे-धीरे अपने को स्वस्थ अनुभव करने लगे। पेशे से एक शल्य चिकित्सक को मानसिक-आध्यात्मिक समस्या थीं। जब पेट की जांच हुई, वे कब्ज तथा वायु-प्रफुल्लता से पीड़ित थे। पेट के इन रोगों का उपचार चला, वे स्वास्थ्य की ओर अग्रसर होने लगे । एक प्राध्यापक तथा एक यांत्रिक अभियंता दोनों ही डिप्रेशन, आत्महत्या प्रवृत्ति से ग्रस्त थे। दोनों ही कोष्ठबद्धता, वायुप्रभुल्लता से पीड़ित थे। जब वे पेट के इन रोगों से मुक्त हुए, स्वास्थ्य लाभ मिला ।

कोई भी रोग हो, आप अपने पेट का धैर्य के साथ सिर्फ प्राकृतिक उपचार कीजिए, निःसंदेह आपको स्वास्थ्य -लाभ मिलेगा। इसलिए प्राकृतिक चिकित्सा की अधिकांश चिकित्सा- प्रविधियां पेट को प्रभावित करने वाली ही है । इनसे सुप्त नाभि-केन्द्र का भी जागरण होता है। जागृत नाभि केन्द्र स्वास्थ्य का मूल स्त्रोत है। पेट की बिमारियां नाभि को जागृत नहीं होने देतीं । विभिन्न प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक रोगों से सम्बन्ध रखने वाले पेट के रोग निम्नलिखित हैं। इन्हे हमने शत्रु-रोग नाम दिया है क्योंकि ये सभी रोगों के कारण का रूप है तथा हर रोग के साथ इनकी सांठ-गांठ है :-

(1) कोष्ठबद्धता (2) अजीर्ण (3) वायुप्रफुल्लता (4) पुराना पेचिश (5) अम्ल रोग ।

कोष्ठबद्धता (Constipation)

शत्रु रोगों में पहली कोष्ठबद्धता है। इसलिए आधुनिक चिकित्सक इसे रोग मानने के लिए तैयार नहीं हैं, लेकिन वैज्ञानिकों की विभिन्न खोजों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह रोग ही नहीं है, वरन् महारोग है। दिखने में तो यह सामान्य रोग दिखता है लेकिन कोई ऐसा रोग नहीं है, जिसे पैदा करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका न हो। इसीलिए तो इसे रोगों की जननी (Constipation is the root cause of all diseases) कहा गया है।

ऐसे लोगों से पाला पड़ा है जो 3-4 दिन के बाद शौच जाते हैं, वे भी दवा के सहारे । जब एक-दो दिन तक शौच खुल कर नहीं आये, तो सम्भल जाइए, हो सकता है आप कोष्ठबद्धता के शिकार हों । जो कुछ भी हम खाते हैं उसका आमाशय तथा आंतो

द्वारा पाचन, अवशोषण सात्मीकरण होता है। अनपचा कूड़ा–कचरा मल के रूप में स्वतः बाहर निकाल दिया जाता है। जब यह मल बाहर नहीं निकलता है, उसे ही हम कोष्ठबद्धता या कब्ज कहते हैं ।

यह कूड़ा–कचरा अधिक समय तक पड़ा–पड़ा सड़ता रहता है, कीटाणु तथा विषैली गैस पैदा होती है । जो टॉक्सिक मैटर बाहर निकल जाना चाहिए, उनका पुनः अवशोषण आंतों द्वारा होने लगता है तथा विषैली गैस शरीर के समस्त अंगों तक पहुंच जाती है। रक्त तथा सारा शारीरिक संस्थान प्रदूषित हो जाता है । कब्ज की स्थिति कुछ दिन तक बनी रहे तो व्यक्ति में सुस्ती, सिर दर्द, सिर का भारीपन, पेट का भारीपन, नींद ठीक नहीं आना, मतिभ्रम, भूख नहीं लगना, मन्दाग्नि, अजीर्ण, कमर दर्द, वायुप्रफुल्लता आदि अनेक रोगों के लक्षण दिखते है। आंतों की एक स्वाभाविक सर्पिल गति (Peristaltic Movement) होती है। जिसके द्वारा मल आगे की ओर खिसकता है। कोष्ठबद्धता की स्थिति में यह गति अवरूद्ध हो जाती है, कोष्ठबद्धता का प्रमुख कारण भोजन में खुंझे का अभाव है। चाय, चीनी, कॉफी, मिर्च, मसाले, मैदा तथा बेसन से बने तले–भुने आहार, संश्लेषित तथा परिशोधित (Synthetic and redfined) आहार से कब्ज होता है। मानसिक चिन्ता से भी कब्ज होता है। अनेक रोगों से मरे हुए हजारों रोगियों की पोस्टमार्टम रिपोर्ट सिद्ध करती है कि प्रायः प्रत्येक रोग का कारण आंतों में एकत्रित सड़ा मल है, जिसमें घातक कीटाणु पैदा होकर सारे संस्थान को विषाक्रान्त कर देते है।

कोष्ठबद्धता की चिकित्सा

कब्ज की जितनी भी दवाइयां है, सभी एक से बढ़कर एक घातक हैं। ये दवाएं आंतों तथा परिपाक यंत्रों की नाजुक झिल्लियों पर उत्तेजक प्रभाव डालकर उन्हें काफी हानि पहुंचाती हैं । आंतें कमजोर हो जाती हैं, उनकी स्वाभाविक सर्पिल गति खत्म होने लगती है। पैराफीन तथा कास्टर ऑयल जैसे रेचक औषधियां भी हानिकारक हैं, इनका दुष्प्रभाव विशेष रूप से यकृत पर होता है, वह निष्क्रिय हो जाता है। इनके ज्यादा प्रयोग से पीलिया तथा शरीर कुपोषण का शिकार होता है। श्वास वाहिकाएं, फेफड़े तथा गले सम्बन्धी रोग होते हैं।

प्रकृति ने प्रत्येक जीवन की आंतों को एक स्वाभाविक शक्ति प्रदान की है, जिससे इकट्ठा मल सरलता से बाहर निकल जाता है। यह शक्ति तभी बनी रहती है, जब हमारा आहार–विहार भी प्रकृति के अनुरूप हो। हम प्रायः हरी सब्जी तथा फल ज्यादा खाते हैं फिर भी कब्ज के शिकार हैं। सब्जी खूब खाते हैं, लेकिन इसका सारा छिलका उतारकर तथा इस प्रकार तलते–भुनते हैं कि सारा पौष्टिक तत्व तथा पानी जल कर एक किलोग्राम सब्जी की आधा पाव सब्जी बच जाए । नाम होगा 1 किलोग्राम सब्जी का लेकिन खाते हैं आधा पाव सब्जी, वह भी विकृत करके । जो स्वस्थ हो, वह भी बीमार हो जाए।

फल अथवा कच्ची खाई जाने वाली सब्जी (ककड़ी, खीरा, नाशपाती, चीकू, सेब इत्यादि) भी लोग खाते हैं तो उसका छिलका उतार कर । रोटी बनायें चोकर निकाल कर। दाल बनायेंगे छिलका उतार कर। लेकिन ये खा रहे हैं, कर क्या रहे हैं, शरीर में सिर्फ कूड़ा–कचरा डालने के सिवाय ।

सभी प्रकार के खाये जाने योग्य छिलकों में कब्ज को दूर करने की अद्‌भुत क्षमता है। सारे शरीर तथा आंतों को शक्ति प्रदान करने वाले सभी प्रकार के आवश्यक विटामिन, डेक्स्ट्रीन्स, खनिज लवण प्रचुर मात्रा में इन छिलकों में पाया जाता है। ये आंतों में इकट्ठे विजातीय टॉक्सिक आर्गेनिज्म को झाड़–बुहार कर बाहर निकाल देते हैं। कोष्ठबद्धता तथा इससे सम्बन्धित अन्य रोगों में निम्नलिखित आहार एवं उपचारक्रम रोग से पूर्ण मुक्त कर स्वास्थ्य पुनः प्रतिष्ठापित करता है।

आहार उपचार क्रम

पानी कम मात्रा में पीना भी कोष्ठबद्धता का एक बहुत बड़ा कारण है। इसीलिए प्रातः काल शौच के पूर्व ताम्र–पात्र में रखा

दो गिलास जल पीएं । जीर्ण कब्ज की स्थिति में दो गिलास गर्म पानी+नींबू का रस+2 चम्मच शहद+15 ग्राम अदरक का रस मिलाकर पीएं ।

फिर 15–20 मिनट बाद दातुन करते हुए टहलें । हाजत की इच्छा हो तो तुरन्त जाएं। प्रारम्भ में दो दिन सिर्फ उबली सब्जी, 2 दिन फलाहार, 2 दिन रसाहार, 2 दिन नींबू+पानी+शहद प्रत्येक 3–3 घंटे के अंतराल पर लें। पर्याप्त मात्रा में जल पीयें । फिर रसाहार, फलाहार, उबली सब्जी पर आकर एक रोटी, सब्जी, सलाद शुरू कर दें। अपने दैनिक आहार में निम्न आहार लें – नाश्ते में अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार तथा मौसमानुसार फल बेलगिरी का फल, अंगूर, अमरूद, आम, नाशपाती, चीकू, टमाटर, खजूर, भीगा हुआ किशमिश 15–20 दाने और दूध । अंकुरित अनाज, सब्जी मौसमानुसार कच्ची ककड़ी, टमाटर, लौकी, खीरा, टिण्डा, तोरई इच्छानुसार लें।

मध्यान्ह काल का आहार

चोकरदार मोटे आटे की रोटी (भूख का आधी) +उबली सब्जी डेढ़ पाव+सलाद+अंकुरित अनाज+दही आदि ।

अपरान्ह काल :-

छाछ या सूप या सब्जी या फल का रस । सायंकालीन भोजन (7 बजे तक)– रोटी, सब्जी, सलाद । जो लोग मोटापे तथा कब्ज से ग्रस्त हैं, वे लोग सायंकालीन भोजन में सिर्फ फल या कच्ची सब्जी, अंकुरित अनाज और एक कप दूध लें । सोने के एक घंटे पहले दूध लें। आहार अपने मन के अनुसार बदल–बदल कर लें ।

चिकित्सा क्रम में प्रातः खाली पेट आधे घंटे मिट्टी पेडू पर रखें, तत्पश्चात् गरम–ठण्डा सेंक रीढ़, पेट व यकृत का देकर मालिश करें। फिर एनिमा, उसके बाद लपेट या ठण्डा कटि स्नान 15 मिनट के लिए दें । यह क्रम 5 दिन लगातार करें । फिर एनिमा बंद कर दें । आवश्यकता पड़ने पर फिर प्रयोग करें ।

भोजन के तीन घंटे बाद मध्यकाल में मिट्टी की पट्टी प्रतिदिन तथा गीली चादर लपेट, गरम–ठण्डा कटिस्नान, स्थानीय वाष्प पेट व कमर का देकर लपेट या ठण्डा कटिस्नान आवश्यकतानुसार बदल–बदल कर दें । उपचार के समय सभी प्रकार की सावधानी रखें। आसनों में जानुशिरासन, पश्चिमोत्तासन, योगमुद्रा, पक्षी आसन, उत्तानपादासन, धानुरासन, चक्रासन, पवनमुक्तासन, शलभासन, भुजंगासन, सर्वांगासन, हलासन तथा मत्स्यासन करें। षट्कर्म में 10 दिन कुंजर क्रिया सीखी है। मात्र शंख–प्रक्षालन तथा आहार सुधार से अनेक रोगियों को कोष्ठबद्धता की शिकायत दूर हो गई । पुराने कब्ज की स्थिति में जीवन्त शाक–फलौषधि, जैसे–प्रातःकाल करेले या आंवले का रस एक कप ले सकते हैं।

उपर्युक्त आहार, योग एवं प्राकृतिक उपचार से आंतों की ताकत (Tone) बढ़ती है, मल को फेंकने वाली सर्पिल गति स्वाभाविक हो जाती है। कब्ज का स्थायी उपचार हो जाता है। पुराने कब्ज में पेट व आंतों की नस–नाड़ियां काफी कमजोर हो जाती है। उन्हें सशक्त करने का यही एक रास्ता है । प्रतिदिन प्रातः काल 3–4 कि.मी. भ्रमण भी करें। शौच लगते ही जाएं । शौच के लिए एक समय निर्धारित कर लें और उस समय पर अवश्य जाएं । शौच में अधिकतम समय 5–10 मिनट लगे । अधिक समय तक तथा दबाव डालकर शौच करने से रक्तार्श तथा फिशर आदि उपद्रव हो सकते है। बार–बार भोजन नहीं करें। पतंजलि योगपीठ के 'योगग्राम' में प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा साध्य और असाध्य रोगों का सफलता पूर्वक उचार किया जाता है। यहां पुराने कब्ज से आसानी से छुटकारा मिल जाता है।

योग सन्देश से साभार

...........***...........

आर्य जगत के समाचार

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

आर्यरत्न डा. ओमप्रकाश (म्यॉमार) स्मृति पुरस्कार

- न्यास द्वारा ऑन लाइन टेस्ट प्रारंभ ।
- वर्ष में तीन बार दिया जावेगा 5100 रू. का उपरोक्त पुरस्कार ।
- आयु लिंग योग्यता की कोई बाधा नहीं । आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र है ।
- विश्व भर के लोगों से इस आनलाइन टेस्ट में भाग लेने का अनुरोध ।

वेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

आर्य रत्न डॉ. ओम प्रकाश (म्यॉमार) स्मृति पुरस्कार

- आप जीत सकते हैं 5100 रू.
- आपको क्या करना होगा -
- न्यास की बेवसाइट www.satyarthprakashnyas.org पर लॉग ऑन करें । ऑन लाइन टेस्ट को क्लिक करें । साधारण सा जानकारी पत्र ऑनलाइन भरें । 50 प्रश्नों का सैट हिन्दी व अंग्रेजी में उपलब्ध है । भाषा विकल्प चुनें । बहुविकल्पीय प्रश्न पत्र को हल करें।

आप अपने प्राप्तांक तत्समय ही जान सकेंगे । पुरस्कार चार माह में एक बार दिया जावेगा । अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले एक से अधिक प्रतिभागी होने की दशा में निर्णय लॉटरी द्वारा होगा । प्रतिभागी के लिए आयु सीमा व अन्य कोई बंधन नहीं है । अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश एवं न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ पढ़ें, जो कि हमारी बेवसाईट पर उपलब्ध है ।

- डॉ. अमृतलाल तपड़िया
परीक्षा समन्वयक

..........***..........

सभा क्षेत्र के समाचार व सूचनाएं

प्रदेश में सभा क्षेत्र में महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं ऋषि बोधोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया। निम्न आर्य समाजों में आयोजन हुए :-

आर्य समाज ताजनगर नागपुर - श्री हरिदत्त जुमले एवं डा. शर्मा के प्रयासों से आयोजन ।

आर्य समाज जरीपटका नागपुर - सर्व श्री प. सुरेन्द्र पाल आर्य, चेतूराम जी एवं चन्दुराम का योगदान रहा ।

आर्य समाज बेलखेड - श्री शान्ति राम गोमसे द्वारा रूचि ली गई ।

आर्य समाज हंसापुरी - में ऋषि बोधोत्सव का उत्साह पूर्वक आयोजन हुआ । इस अवसर पर पं. कृष्ण कुमार शास्त्री द्वारा यज्ञ करवाया गया । आपने प्रवचन देते हुए कहा कि सत्य व ज्ञान का प्रसार आयोजन का उद्देश्य है । ज्ञान प्राप्त करना होगा । मंत्री श्री अशोक यादव ने कहा कि पर्व की महत्ता को समझना होगा तथा समाज की बुराइयों को दूर कराना होगा । इस से मानव कल्याण होगा । सभा मंत्री

प्रा. श्री अनिल शर्मा कोषाध्यक्ष श्री सतोष गुता सर्वश्री रंगलाल प्रजापति, रायभान महिला अध्यक्ष श्रीमती तेजस्विनी रिनके, संगीता यादव तथा प्रतिष्ठित गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। इसके बाद ऋषि लंगर सम्पन्न हुआ । चित्र आवरण पृष्ठ पर दृष्टव्य है । **आर्य समाज पहुरजिरा** – 25 से 26 जनवरी तक गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ । यज्ञ में नारी भीड़ दिखने में आई । इसमें सभा प्रधान श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री सभा मंत्री प्रा. अनिल शर्मा, कार्यालय मंत्री अशोक यादव, सभा कोषाध्यक्ष श्री यशपाल जानवानी आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। आयोजन का चित्र हम आवरण पृष्ठ पर दे रहे हैं ।

आर्य समाज नेपियर टाउन जबलपुर – महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस नगर की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के द्वारा आर्य नेपियर टाउन के तत्वावधान में आयोजित किया ।

वैसे तो यह आयोजन ऋषि जन्म दिवस से ऋषि बोधोत्सव तक मनाया गया आज के आयोजन के मुख्य अतिथि थे। सर्वोच्य न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश माननीय श्री डी.एम. धर्माधिकारी महोदय । आपने अपने गरिमामय उद्गारों में कहा कि आज की आंतरिक समस्याओं – अर्थात् भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद – दोनों के समाधान महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित विचारों, सिद्धांतों मे हैं । उनका अनुसरण आवश्यक है।

1. सभा के मुख्य वक्ता श्री आचार्य सुखदेव जी तपस्वी, नई दिल्ली । आपने वैदिक विचारधारा के अनुसरण से वैयक्तित्व तथा राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान होने की बात कही । समाज के पुरोहित आचार्य धीरेन्द्र पाण्डेय ने कहा कि महर्षि ने लोक कल्याण के कार्यो को कठिन परिस्थितियों में सम्पन्न कराया। इसके लिए उन्हे 17 बार विषपान करना पड़ा, पर जो कार्य वे कर गये हैं वे ऐतिहासिक धरोहर है। चार दिवसीय आयोजन में आर्ष गुरूकुल होशंगाबाद के विद्यार्थियों द्वारा किया गया । आयोजन में सुमधुर गीत एवं भजन आदि भी प्रस्तुत किये गये। नगर की समस्त आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। आर्य समाज नेपियर टाउन के प्रधान श्री के. डी. कौशल व अन्य सदस्य, सर्व श्री ह्रदय स्वरूप गुप्ता, रौशन लाल संघी तथा महिला आर्य समाज की प्रधाना डॉ. सुश्री, सावित्री सिंग आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया ।

सभा का संचालन श्री जगदीश मित्र कुमार द्वारा किया गया। (आयोजन का चित्र हम आवरण पृष्ठ पर दे रहें हैं ।)

आर्य समाज गोरखपुर, जबलपुर

नगर की समस्त आर्य समाजों के द्वारा शिवरात्रि एवं महर्षि बोधोत्सव आर्य समाज गोरखपुर के तत्वावधान में मनाया गया। समाज के पुरोहित आचार्य श्री विकास देव जी के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ । दिल्ली से पधारे आचार्य सुखदेव तपस्वी मुख्य वक्ता थे। आपने बताया कि परमेश्वर के सानिघ्य में जाकर ही आनन्द की प्राप्ति की जा सकती है। आचार्य धीरेन्द्र पाण्डे ने कहा कि व्यक्ति दस इन्द्रियों को वश में करके दशरथ बन सकता है । समाज के संगठन को दृढ़ करना होगा । आचार्य श्री विकास देव शास्त्री ने कहा कि बोध आत्मा का विषय है अतः आत्म साधना करके हमें बोध प्राप्त हो सकता है। इसके लिए प्रयत्न वांछनीय हे। बालकों अर्थात उत्कर्ष, मंजरी गायकवाड़ आदि ने अपनी प्रस्तुतियों के द्वारा खूब तालियाँ बटोरीं। डॉ. ईश्वर मुखी ने सार्थक प्रवचन दिया । श्री जे. पी. रथ, श्रीमती विमला सैनी, श्रीमति विभा पटैल आदि ने मधुर भजन व गीतों द्वारा महर्षि का गुणगान किया । संचालन मंत्री श्री प्रकाश सोनी तथा आभार प्रदर्शन समाज के प्रधान श्री ब्रजमोहन नेहरा द्वारा किया गया । अन्त में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया जिसमें नगर के विभिन्न कोनों से आये आर्यों द्वारा प्रीति पूर्वक भोजन किया। (आयोजन का चित्र हम आवरण पृष्ट पर दे रहे है)

...........***...........

आर्य पर्वों की सूची

विक्रम सम्वत् 2069–70 तदनुसार सन् 2013

क्र.सं.	पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	वार
1.	लोहड़ी	पौष शुक्ल,2 वि.2069	13/01/2013	रविवार
2.	मकर संक्रान्ति	पौष शुक्ल,3 वि.2069	14/01/2013	सोमवार
3.	गणतंत्र दिवस	पौष शुक्ल, 14 वि.2069	26/01/2013	शनिवार
4.	वसन्त पंचमी	माघशुक्ल, 5 वि. 2069	15/02/13	शुक्रवार
5.	सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि.2069	5/3/2013	मंगलवार
6.	**ऋषि पर्व**–महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण, 10 वि.2069	7/3/2013	गुरूवार
7.	**ज्योति पर्व**–शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 14 वि.2069	10/03/2013	रविवार
	वीर पर्व–पं. लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि.2069	14/03/2013	गुरूवार
9.	**मिलन पर्व**–नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि.2069	26/03/2013	मंगलवार
10.	आर्य समाज स्थापना दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी गुड़ी पड़वा/चैती चांद	चैत्र शुक्ल, 1 वि.2070	11/04/2013	गुरूवार
11.	रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि.2070	19/04/2013	शुक्रवार
12	वैशाखी	चैत्र शुक्ल, 4 वि .2070	13/04/2013	शनिवार
13	पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	वैशाख शुक्ल, 3वि.2070	13/05/2013	सोमवार
14	हरितृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3वि.2070	09/08/2013	शुक्रवार
15	**वेद प्रचार समारोह** –श्रावणी उपाकर्म–रक्षा बंधन	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2070	20/08/2013	मंगलवार
	हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	भाद्रपद कृष्ण, 4 वि. 2070	24/08/2013	शनिवार
16	श्री कृष्णजन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण, 8 वि.2070	28/08/2013	बुधवार
17	विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल,10 वि.2070	13/10/2013	रविवार
18	स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल,12 वि.2070	16/10/2013	बुधवार
19	**क्षमा पर्व** – दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या वि. 2070	3/11/2013	सोमवार
20	**बलिदान पर्व** – स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष कृष्ण 6,वि.2070	23/12/2013	सोमवार

नोट : देशी तिथियों में घट–बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है ।

...........***...........

आर्य समाजों वं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि पर्वों का आयोजन उत्साह पूर्वक करने का कष्ट करें एवं समाचार देवें जिससे उन्हें प्रकाशित किया जा सके ।

अनिल शर्मा,
मंत्री

सत्यवीर शास्त्री,
प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ नागपुर

आर्य सेवक मासिक
प्रेस पंजीयन क्र
(…/123/20…3)
फरवरी – 2013 ई.

प्रेषक
पो.आ.बॉ.
नं. 76
जी.पी.ओ.
नागपुर
440001

प्रति, ____________

____

____

आर्य समाज नेपियर टाउन जबलपुर
महर्षि दयानन्द जन्मदिवस

आ. श्री तपस्वी सम्बोधित करते हुए (समाचार पृष्ठ 22 पर देखें)

आर्य समाज गोरखपुर जबलपुर
कृषि बोधोत्सव आयोजन

डॉ. ईश्वर मुखी सम्बोधित करते हुए (समाचार पृष्ठ 22 पर देखें)

प्रकाशक : प्रा. अनिल शर्मा, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ द्वारा उक्त सभा के लिए प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : आर्य प्रिंटिंग प्रेस, गोरखपुर, जबलपुर, फोन : 0761–4035487